

 **AstroSage**

World's No. 1 Astrology Portal & App

कीमत: ~~\$ 10~~ मुफ्त

अवकहडा चक्र

पाया (नक्षत्र आधारित)	चाँदी
वर्ण	क्षत्रिय
योनी	मूषक
गण	मानव
वश्य	वनचर
नाड़ी	मध्य
दशा भोग्य	Ven 5 Y 0 M 13 D
लग्न	तुला
लग्न स्वामी	शुक्र
राशि	सिंह
राशि स्वामी	सूर्य
नक्षत्र-पद	पू०फाल्गुनी ३
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
जुलियन दिन	2447197
सूर्य राशि (हिन्दू)	मकर
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कुंभ
अयनांश	023.41.25
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.27
साम्पातिक काल	08.09.17

अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	5
शुभ अंक	1, 3, 7, 9
अशुभ अंक	8
शुभ वर्ष	14,23,32,41,50
भाग्यशाली दिन	गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, मंगल, चंद्र
मित्र राशियां	मेष, धनु, मिथुन
शुभ लग्न	सिंह, वृश्चिक, मीन
भाग्यशाली धातु	सुवर्ण
भाग्यशाली रत्न	माणिक

व्यक्ति विवरण

लिंग	Male
दिनांक	5 : 2 : 1988
समय	23 : 10 : 6
दिन	शुक्रवार
इष्टकाल	041-01-53
जन्म स्थान	Sindhuli
टाइम जोन	5.75
अक्षांश	27 : 15 : N
रेखांश	85 : 58 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:01:07
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	23:8:58
जन्म समय – जीएमटी	17:25:6
तिथि	तृतिया
हिन्दू दिन	जुक्रवार
पक्ष	कृष्ण
योग	अतिगण्ड
करण	विष्टि
सूर्योदय	06:45:20
सूर्यास्त	17:44:51
दिन अवधि	10:59:30

घटक (अशुभ)

दिन	शनिवार
करण	बालव
लग्न	मकर
माह	ज्येष्ठ
नक्षत्र	मूल
प्रहर	1
राशि	मकर
तिथि	3, 8, 13
योग	प्रीत
ग्रह	शनि, शुक्र

शादी से जुड़े सवाल?

सिर्फ वेरिफाइड ज्योतिषियों से पूछें

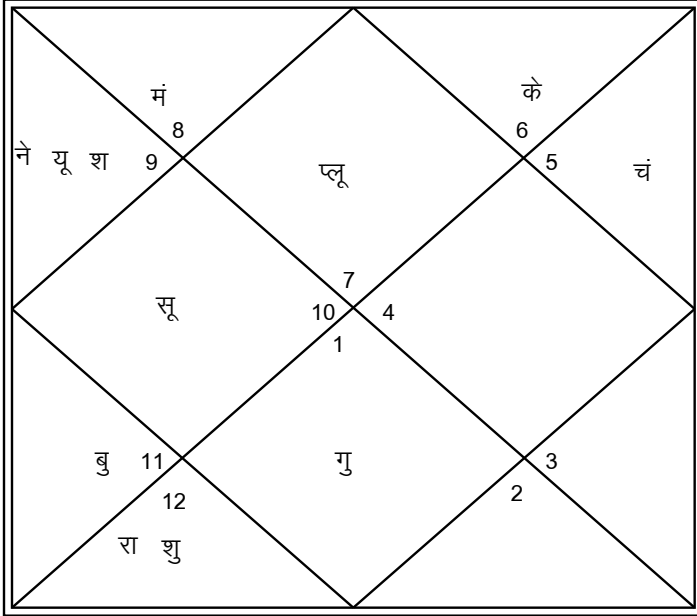
फ्री कंसल्टेशन



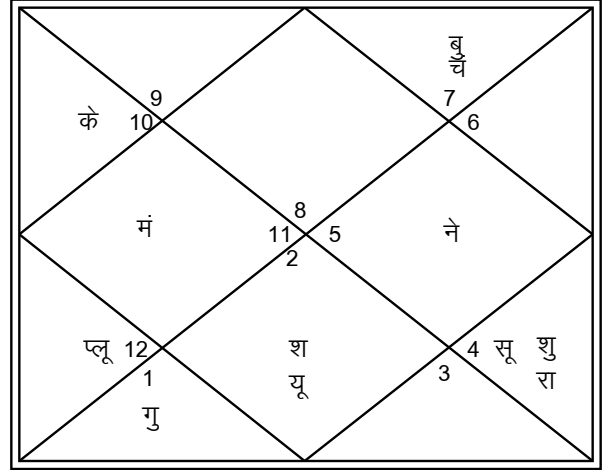
पारम्परिक

नाम	Niresh Sir	जुलियन दिन	2447197	लग्न स्वामी	शुक्र	दशा भोग्य	Ven 5 Y 0 M 13 D
लिंग	Male	अयनांश नाम	लाहिरी	लग्न	तुला	करण	विष्टि
दिनांक	5.2.1988	अयनांश	023.41.25	योग	अतिगण्ड	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Sindhuli	तिथि	तृतिया	नक्षत्र-पद	पू०फाल्गुनी-३
समय	23.10.6	रेखांश	85.58.E	सूर्यास्त	17.44.51	राशि स्वामी	सूर्य
साम्पातिक काल	08.09.17	अक्षांश	27.15.N	सूर्योदय	06.45.20	राशि	सिंह

लग्न चक्र



नवमांश चक्र



विंशोत्तरी दशा

शुक्र -20 वर्ष 5/ 2/ 88 से 19/ 2/ 93	
शुक्र	00/00/00
सूर्य	00/00/00
चंद्र	00/00/00
मंगल	00/00/00
राहु	00/00/00
गुरु	00/00/00
शनि	19/2/89
बुध	19/12/91
केतु	19/2/93

सूर्य -6 वर्ष 19/ 2/ 93 से 19/ 2/ 99	
सूर्य	7/6/93
चंद्र	7/12/93
मंगल	13/4/94
राहु	7/3/95
गुरु	25/12/95
शनि	7/12/96
बुध	13/10/97
केतु	19/2/98
शुक्र	19/2/99

चंद्र -10 वर्ष 19/ 2/ 99 से 19/ 2/ 09	
चंद्र	19/12/99
मंगल	19/7/00
राहु	19/1/02
गुरु	19/5/03
शनि	19/12/04
बुध	19/5/06
केतु	19/12/06
शुक्र	19/8/08
सूर्य	19/2/09

मंगल -7 वर्ष 19/ 2/ 09 से 19/ 2/ 16	
मंगल	16/7/09
राहु	4/8/10
गुरु	10/7/11
शनि	19/8/12
बुध	16/8/13
केतु	13/1/14
शुक्र	13/3/15
सूर्य	19/7/15
चंद्र	19/2/16

राहु -18 वर्ष 19/ 2/ 16 से 19/ 2/ 34	
राहु	1/11/18
गुरु	25/3/21
शनि	1/2/24
बुध	19/8/26
केतु	7/9/27
शुक्र	7/9/30
सूर्य	1/8/31
चंद्र	1/2/33
मंगल	19/2/34

गुरु -16 वर्ष 19/ 2/ 34 से 19/ 2/ 50	
गुरु	7/4/36
शनि	19/10/38
बुध	25/1/41
केतु	1/1/42
शुक्र	1/9/44
सूर्य	19/6/45
चंद्र	19/10/46
मंगल	25/9/47
राहु	19/2/50

शनि -19 वर्ष 19/ 2/ 50 से 19/ 2/ 69	
शनि	22/2/53
बुध	1/11/55
केतु	10/12/56
शुक्र	10/2/60
सूर्य	22/1/61
चंद्र	22/8/62
मंगल	1/10/63
राहु	7/8/66
गुरु	19/2/69

बुध -17 वर्ष 19/ 2/ 69 से 19/ 2/ 86	
बुध	16/7/71
केतु	13/7/72
शुक्र	13/5/75
सूर्य	19/3/76
चंद्र	19/8/77
मंगल	16/8/78
राहु	4/3/81
गुरु	10/6/83
शनि	19/2/86

केतु -7 वर्ष 19/ 2/ 86 से 19/ 2/ 93	
केतु	16/7/86
शुक्र	16/9/87
सूर्य	22/1/88
चंद्र	22/8/88
मंगल	19/1/89
राहु	7/2/90
गुरु	13/1/91
शनि	22/2/92
बुध	19/2/93

ग्रह स्थिति	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	तुला	04.55.22	चित्रा	4
सूर्य	मकर	22.26.57	श्रवण	4
चंद्र	सिंह	23.18.33	पू०फाल्गुनी	3
मंगल	वृश्चिक	25.05.49	ज्येष्ठा	3
बुध (व)	कुंभ	03.16.43	धनिष्ठा	3
गुरु	मेष	00.26.35	अश्विनी	1
शुक्र	मीन	01.46.18	पूर्वाभाद्रपद	4
शनि	धनु	05.35.12	मूल	2
राहु (व)	मीन	01.34.53	पूर्वाभाद्रपद	4
केतु (व)	कन्या	01.34.53	उ०फाल्गुनी	2
सूरे	धनु	05.57.33	मूल	2
नेप	धनु	15.19.21	पूर्वाषाढा	1
प्लू	तुला	18.50.22	स्वाती	4

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	2	2	4	5	6	6	4	3	5	5	4	2
चंद्र	4	4	4	5	5	3	4	4	4	4	4	4
मंगल	1	2	5	3	4	3	5	2	4	3	3	4
बुध	2	5	6	5	3	5	4	7	4	5	3	5
गुरु	6	4	5	5	4	3	4	7	4	4	7	3
शुक्र	5	2	4	5	5	3	6	5	6	4	3	4
शनि	3	1	1	3	5	3	6	2	2	6	4	3
योग	23	20	29	31	32	26	33	30	29	31	28	25

चलित तालिका				
भाव	राशि	भाव आरंभ	राशि	भाव मध्य
1	कन्या	20.10.36	तुला	04.55.22
2	तुला	20.10.36	वृश्चिक	05.25.50
3	वृश्चिक	20.41.04	धनु	05.56.18
4	धनु	21.11.32	मकर	06.26.47
5	मकर	21.11.32	कुंभ	05.56.18
6	कुंभ	20.41.04	मीन	05.25.50
7	मीन	20.10.36	मेष	04.55.22
8	मेष	20.10.36	वृषभ	05.25.50
9	वृषभ	20.41.04	मिथुन	05.56.18
10	मिथुन	21.11.32	कर्क	06.26.47
11	कर्क	21.11.32	सिंह	05.56.18
12	सिंह	20.41.04	कन्या	05.25.50

॥ आपका लग्न ॥

लग्न क्या है –

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितिज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पड़ती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **तुला**

स्वास्थ्य तुला लग्न के लिए:

तुला लग्न आपकी त्वचा को अत्यधिक संवेदनशील बना रहा है। इस संवेदनशीलता का कारण अनिद्रा, गरिष्ठ भोजन और शराब का अत्यधिक सेवन हो सकता है। आपको पीठ के निचले हिस्से और अंडाशय के निचले हिस्से में दर्द जैसी समस्याएं परेशान कर सकती हैं। तथा आपको अत्यधिक शक्कर और भारी भोजन के सेवन से बचना चाहिए।

स्वभाव व व्यक्तित्व तुला लग्न के लिए:

तुला लग्न के लोग सहयोगी और समझौता करने में रुचि रखते हैं और उन्हें जब लगता है कि यह सही है तो वे बिना बहस के उसे स्वीकार करना भी पसंद करते हैं। दूसरों की असहमति से उनमें असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है। तथा आप जिंदगी में सदभावना के लिए लालायित रहते हैं। और इसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। आपकी लग्न के लोग अविश्वासी, संकोची, दिनचर्या के प्रति असहज, रूढ़िवादी और शर्मिले स्वभाव के होते हैं। आपको जल्द क्रोध नहीं आता लेकिन जल्द उग्र होने की संभावना प्रबल बनी रहती है। आप यथार्थवाद के बजाय आदर्शवादी होते हैं और कभी-कभी ऐसी योजना बनाते हैं जो हवा में महल बनाने के समान होती है। क्या सही है और क्या गलत इसके बारे में आप लोगों की राय बिल्कुल स्पष्ट होती है। आपकी लग्न के लोग आम तौर पर शांतिप्रिय प्रकृति के और किसी काम को आसान तरीके से करने वाले माने जाते हैं। आप देखने में आकर्षक हो सकते हैं। तुला लग्न के प्रभाव से आपके बहुत सामाजिक प्रवृत्ति के होने की संभावनाएं बन रही हैं जिससे आपको काफी खुशी मिलती है।

शारीरिक रूप-रंग तुला लग्न के लिए:

तुला लग्न लोग विविध और विशिष्ट होते हैं, उनकी शारीरिक बनावट खासकर होंठ और ललाट से आत्मविश्वास दिखता है। इनके बारे में आम धारणा होती है कि ये कम ऊंचाई वाले होते हैं, और काफी चालाक प्रवृत्ति के होते हैं। इस राशि की महिलाएं काफी आकर्षक होती हैं जबकि पुरुष भी काफी जोशीले होते हैं। इस राशि के लोगों की ऊंचाई औसत या इससे अधिक होती है।

फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

अभी चैट करें



॥ नक्षत्र फल ॥

हिन्दू ज्योतिष में नक्षत्रों का विशेष महत्व है। आकाश को यदि 27 (कभी-कभी 28) बराबर भागों में विभाजित किया जाए, तो प्रत्येक भाग एक नक्षत्र कहलाता है। हर नक्षत्र को बराबर-बराबर चार पदों में भी विभाजित किया गया है। ज्योतिष की अवधारणा के अनुसार हर पद एक अक्षर को इंगित करता है। प्रायः किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा जिस पद में होता है, उससे जुड़े अक्षर से उस व्यक्ति का नाम रखा जाता है।

आपका नक्षत्र रिपोर्ट : पू०फाल्गुनी

आपका नक्षत्र चरण : 3

पू०फाल्गुनी नक्षत्र फल : आप संगीत, कला और साहित्य के अच्छे जानकार हैं क्योंकि इन विषयों के प्रति आपकी बचपन से रुचि है। आपकी विचारधारा शांत है। नैतिकता और सच्चाई के रास्ते पर चलकर जीवन जीना आपको पसंद है। प्रेम का स्थान आपके जीवन में सर्वोपरि है क्योंकि प्रेम को आप अपने जीवन का आधार मानते हैं। मार-पीट, लड़ाई झगड़ों से दूर रहना आपको पसंद है क्योंकि आप शांतिप्रिय हैं। कोई कलह या विवाद होने पर आप बहुत शांतिपूर्ण तरीके से उसका समाधान निकालते हैं, परन्तु जब आपके मान-सम्मान पर कोई आँच आती है तो विरोधियों को परास्त करने में भी आप पीछे नहीं रहते हैं। दोस्तों और अच्छे लोगों का दिल से स्वागत करना भी आप बखूबी जानते हैं। अंतर्ज्ञान की शक्ति तो जैसे आपको विरासत में मिली हो, इसलिए लोगों की भावनाओं को आप पहले से ही भाँप जाते हैं। स्वभाव से आप परोपकारी हैं और घूमने-फिरने के शौकीन हैं। ईमानदारी से कार्य करना आपको पसंद है और जीवन में तरक्की के लिए और आगे बढ़ने के लिए आप सदैव अच्छे और सच्चे मार्ग को चुनते हैं। जीवन में किसी-न-किसी एक क्षेत्र में आप विशेष ख्याति प्राप्त करेंगे, फिर भी किसी कारण से आपका मन अशांत रह सकता है। दूसरों की मदद के लिए आप उनकी याचना करने से पहले ही हाजिर हो जाते हैं क्योंकि आपमें जन्मजात सहानुभूति है। आप स्वतंत्रता-प्रिय हैं इसलिए किसी बंधन में फँसना आपको पसंद नहीं है। ऐसा कोई भी कार्य करना आपको पसंद नहीं है जिसमें दूसरों के अधीन होकर काम करना पड़े। आपमें एक खासियत यह है कि नौकरी में होने पर भी अपने अधिकारी की चापलूसी नहीं करते, इसलिए अपने वरिष्ठ अधिकारियों की कृपादृष्टि से आप वंचित रह जाते हैं। दूसरों के सहारे आप कोई लाभ नहीं लेना चाहेंगे क्योंकि आप त्यागी मनोवृत्ति के हैं। परिवार से आपका विशेष लगाव है और आप अपने परिवार के लिए सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहते हैं।

शिक्षा और आय : रोजगार के क्षेत्र में आप अपने कार्य बदलते रहेंगे। आयु के 22, 27, 30, 32, 35, 37 और 44 वर्ष नौकरी और व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे। आप सरकारी कर्मचारी, उच्च अधिकारी, सत्रियों के वस्त्राभूषण व सौंदर्य-प्रसाधन के निर्माता या विक्रेता, जनता का मनोरंजन करने वाले कलाकार, मॉडल, फोटोग्राफर, गायक, अभिनेता, संगीतज्ञ, विवाह के लिए वस्त्राभूषण या उपहार सामग्री का व्यापार करने वाले, जीव विज्ञानी, आभूषण निर्माता, सूती, ऊनी या रेशमी वस्त्र के कार्य करने वाले आदि हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : आपका पारिवारिक जीवन सुखी होगा। जीवनसाथी और बच्चे अच्छे स्वभाव के मिलेंगे और उनसे भरपूर सुख प्राप्त होगा। आपका जीवनसाथी कर्तव्यनिष्ठ होगा और अपने परिवार के लिए सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर रहेगा। आप प्रेम-विवाह भी कर सकते हैं या किसी पूर्व परिचित व्यक्ति से विवाह कर सकते हैं।

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

चरित्र:

आप एक संवेदनशील एवं भावुक व्यक्ति हैं। जीवन की कठनाइयों का आप पर अन्य लोगों की तुलना में ज्यादा प्रभाव पड़ता है परिणामस्वरूप आप जीवन के कुछ सुखद पल खो देते हैं। दूसरों द्वारा कही गयीं बातों को आप दिल पर ले लेते हैं। अतः कुछ ऐसी बातें हैं जो आपको दुःख देती हैं परन्तु उस पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिये। आपके कार्य करने का तरीका शान्तिपूर्ण है, परिणामस्वरूप आप अपने सहकर्मियों की नजर में मजबूत इच्छाशक्ति एवं दृढ़-निश्चयी वाले व्यक्ति प्रतीत होते हैं। आपकी यह प्रवृत्ति आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करती है। आप बोलने से अधिक सोचते हैं और आपका यह चिन्तनतार्किक होता है। लोग आपसे सलाह मांगने इसलिये आते हैं क्योंकि आपका निर्णयपालन करने योग्य और निष्पक्ष होता है। आपमें अनेक उत्तम गुण हैं। आप एक सहानुभूतिपूर्ण मनुष्य हैं, जोकि आपको एक अच्छा मित्र बनाता है। आप अनुरागी व देशभक्त हैं, यही कारण है कि आप एक अच्छे नागरिक भी हैं। आप प्यारे मातापिता होंगे। आप अपने माता-पिता की इच्छानुसार कार्य करेंगे। निश्चय ही आपकी ये अच्छाइयां दूसरों पर भारी पड़ेंगी।

सौभाग्य व संतुष्टि:

आप सकारात्मक सोच वाले और आत्मविश्वासी व्यक्ति हैं। आप सदैव कार्यों के सही होने की आशा करते हैं व वर्तमान परिणाम को जाने देने की क्षमता रखते हैं। आप दयालु तथा सहिष्णु हैं, व्यावहारिक हैं एवं सूक्ष्म गहराइयों में जाकर किसी भी अवधारणा को पूर्णतः समझते हैं। जीवन के प्रति आप विश्वास और दार्शनिक दृष्टिकोण रखते हैं, जो कि जीवन में आपको कई मौके देता है और सफलता पाने में आपकी मदद करता है।

जीवन शैली:

आपके जीवन में आपके मित्र प्रेरणा का काम करते हैं। आपको उनके सहयोग एवं उत्साहवर्धन की जरूरत है। अतः सफलता प्राप्ति के लिये आपको उन क्षेत्रों में कार्य करना चाहिए, जहाँ पर आपके मित्र आपके प्रगति देख सकें।

क्या आपकी कुंडली में है **राजयोग?**
जानने के लिए

AstroSage AI से करें कंसल्ट

फ्री चैट



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रोजगार:

क्योंकि आप जीवन की प्रत्येक घटना के प्रति संवेदनशील हैं, आप कम झंझट और दबाव वाला काम पसन्द करते हैं। जीवन में कार्यक्षेत्र के चयन के लिये आप अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनें और उसी दिशा में कार्य करें।

व्यवसाय:

आपके अन्दर विचारों को शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता है, अतः आप एक पत्रकार, शिक्षक या भ्रमणशील सेल्समैन के रूप में जाने जाएंगे। आप कुछ कहने से कभी नुकसान में नहीं रहेंगे। यह गुण आपको अध्यापन में भी बेहतर बनाता है। लेकिन जब आपका मन व्यग्र होता है, आपका प्रदर्शन बहुतही खराब होता है। ऐसा कोई भी कार्य जिसमें तीव्र सोच की आवश्यकता होती है, आप उसमें सफल होंगे। परन्तु यह एकसा कार्य नहीं होना चाहिए, अन्यथा आपको गम्भीर असफलता का सामना करना पड़ेगा। आपको परिवर्तन और विविधता पसन्द है, अतः कोई भी कार्य जिसमें आपको देश-विदेश का भ्रमण करना पड़े, आपके लिये उपयुक्त है। अपने लिये किया गया काम आपके लिये बेहतर होगा, बजाय कि दूसरे के लिये। आप स्वेच्छा से आना-जाना पसन्द करते हैं, अतः आपको अपना स्वयं का कार्य करना चाहिए।

स्वास्थ्य:

आपके लिये आराम की विशेष महत्ता है। परिणामस्वरूप, आप स्वादलोलुप हैं और भोजन का पूर्ण आनन्द उठाते हैं। निश्चित तौर पर आप जीने के लिये नहीं खाते, अपितु खाने के लिये जीते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि पाचन-तन्त्र आपके शरीर का ऐसा भाग है, जो आपको सर्वाधिक परेशानी देगा। आपको अपच जैसी बीमारियों को अनदेखा नहीं करना चाहिए और जब वे आती हैं, तो उन्हें दवाओं के द्वारा ठीक करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। आपको सैर एवं हल्का व्यायाम करना चाहिए। हमारी आपको यह सलाह है कि आप पर्याप्त ताजी हवा लें, भोजन पर नियन्त्रण रखें और फलों का सेवन करें। परन्तु यदि फिर भी कोई लाभ न हो, तो चिकित्सक के पास जाने से न झिझकें। पचास साल की आयु के पश्चात् आलस्य जैसे रोगों से दूर रहें। आपकी चीजों को छोड़ने की आदत के कारण आप जिन्दगी से दूर होत जाएंगे। अपनी वस्तुओं में रुचि रखें, अपनी रुचियों का विकास करें एवं ध्यान रखें कि अगर आप युवा-मण्डली में रहते हैं, तो आप कभी भी उम्र का शिकार नहीं होते।

शादी से जुड़े सवाल?

सिर्फ वेरिफाइड ज्योतिषियों से पूछें

फ्री कंसल्टेशन



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रुचि:

आपके कई शौक हैं और आप इन शौकों से ओत-प्रोत हैं। परन्तु अचानक ही आप धैर्य खो देते हैं व उन्हें एक तरफ कर देते हैं। फिर आप कोई नया शौक चुन लेते हैं और उसका भी यही हथ्र होता है। आप जीवन को इसी तरह से जीते जाते हैं। सारांशतः आपकी अभिरुचियां आपको पर्याप्त आनन्द देती हैं, साथ ही आपको बहुत कुछ सीखने का मौका भी देती हैं।

प्रेम आदि:

आप प्रेम को बड़ी गम्भीरता से लेते हैं। वस्तुतः, आपसे पाने का प्रयास इस तरह करते हैं, कि आपका प्रिय उससे भयभीत हो सकता है। एकबार प्रेम की निर्बाध धारा प्रवाहित होना प्रारम्भ हो जाए, आप दर्शाते हैं कि आपका लगाव गहरा व वास्तविक है। आप एक सहानुभूतिपूर्ण जीवनसाथी हैं और जिससे आप विवाह करेंगे, वह आपका अखण्ड प्रेम प्राप्त करेगा। हांलाकि आप उससे यह उम्मीद करते हैं कि वह आपकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुने, परन्तु आपके अन्दर दूसरों की बात को ध्यान से सुनने का धैर्य नहीं है।

वित्त:

वित्त संबन्धी मामलों में, आपको किसी बात की चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। आपके मार्ग में कई सुअवसर आएंगे। आप शून्य से भी काफी कुछ बना सकते हैं, बड़ी एवं उतार-चढ़ाव वाली योजनायें, आपका एकमात्र जोखिम हैं। वित्त के सम्बन्ध में आप अपने मित्रों के लिये, यहाँ तक कि स्वयं के लिये एक पहेली होंगे। आप अपने धन का असामान्य तरीकों में निवेश करेंगे। सामान्य तौर पर, आप पैसा बनाने में सफल रहेंगे मुख्यतः जमीन, घर, अचल सम्पत्ति से जुड़े हुए क्षेत्रों में।



आपका भविष्य, आपकी कुंडली में
व्यक्तिगत राशिफल 2025

अभी ऑर्डर करें

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

शिक्षा:

आपके अंदर गजब की फुर्ती है और आप जीवन में कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन अपने स्वयं के बनाए विरोधाभासों में फँस कर आप अपनी शिक्षा से विमुख हो सकते हैं। ऐसे में आपको इन सभी बातों को त्याग कर खुले दिल से सोचना चाहिए। आपको यह समझना चाहिए कि जो आप हैं, आप उससे भी बेहतर हो सकते हैं और उसके लिए आपको अपनी शिक्षा का दायरा बढ़ाना होगा। यदि आप एक योजना बना कर शिक्षा प्राप्त करेंगे तो आपको जबरदस्त सफलता हासिल होगी। आप जो कुछ भी जानते हैं उसे अन्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना पसंद करते हैं। वास्तव में यही से आप सीखना प्रारंभ कर रहे हैं। क्योंकि जब आप थोड़ा भी जान जाते हैं और उसे लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तो ऐसा करने से वह आपके चित्त की स्मृतियों में अंकित हो जाता है और यही आपको अपनी शिक्षा में मदद करता है। आप वास्तव में ऐसी शिक्षा प्राप्त करेंगे जो जीवन में आपको एक अच्छा मुकाम दिलाने में सहायक होगी और आपको मानसिक रूप से भी संतुष्टि प्रदान करेगी।



आपका भविष्य, आपकी कुंडली में
व्यक्तिगत राशिफल 2025

अभी ऑर्डर करें

॥ मंगलदोष विवेचन ॥

सामान्यतः मंगल दोष जन्म-कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से द्वितीय भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से चतुर्थ भाव में है।

अतः मंगल दोषलग्न कुण्डली में उपस्थित नहीं है परन्तु चंद्र कुण्डली में उपस्थित है।

ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खड़ी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)

कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

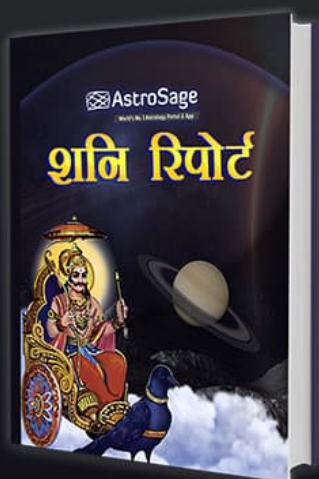
उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)

- 1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
- 2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- 3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।

- 1) चिड़ियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
- 2) घर पर हाथी-दांत रखें।
- 3) बरगद के पेड़ की पूजा मीठे दूध से करें

नोट: हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।



शनि को सुधारें

शनि रिपोर्ट पाएं

अभी ऑर्डर करें

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

नाम	Niresh Sir
दिनांक	5/2/1988
समय	23:10:6
जन्म स्थान	Sindhuli
लिंग	Male
राशि	सिंह
तिथि	तृतिया
नक्षत्र	पू०फाल्गुनी

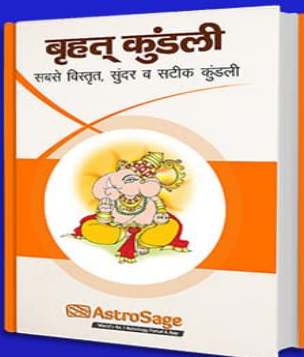
क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	छोटी पनौती	मीन	जून 02, 1995	अगस्त 09, 1995	
2	छोटी पनौती	मीन	फरवरी 17, 1996	अप्रैल 17, 1998	
3	साढे साती	कर्क	सितम्बर 06, 2004	जनवरी 13, 2005	उदय
4	साढे साती	कर्क	मई 26, 2005	अक्टूबर 31, 2006	उदय
5	साढे साती	सिंह	नवम्बर 01, 2006	जनवरी 10, 2007	शिखर
6	साढे साती	कर्क	जनवरी 11, 2007	जुलाई 15, 2007	उदय
7	साढे साती	सिंह	जुलाई 16, 2007	सितम्बर 09, 2009	शिखर
8	साढे साती	कन्या	सितम्बर 10, 2009	नवम्बर 14, 2011	अस्त
9	साढे साती	कन्या	मई 16, 2012	अगस्त 03, 2012	अस्त
10	छोटी पनौती	वृश्चिक	नवम्बर 03, 2014	जनवरी 26, 2017	
11	छोटी पनौती	वृश्चिक	जून 21, 2017	अक्टूबर 26, 2017	

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	छोटी पनौती	मीन	मार्च 30, 2025	जून 02, 2027	
13	छोटी पनौती	मीन	अक्टूबर 20, 2027	फरवरी 23, 2028	
14	साढे साती	कर्क	जुलाई 13, 2034	अगस्त 27, 2036	उदय
15	साढे साती	सिंह	अगस्त 28, 2036	अक्टूबर 22, 2038	शिखर
16	साढे साती	कन्या	अक्टूबर 23, 2038	अप्रैल 05, 2039	अस्त
17	साढे साती	सिंह	अप्रैल 06, 2039	जुलाई 12, 2039	शिखर
18	साढे साती	कन्या	जुलाई 13, 2039	जनवरी 27, 2041	अस्त
19	साढे साती	कन्या	फरवरी 06, 2041	सितम्बर 25, 2041	अस्त
20	छोटी पनौती	वृश्चिक	दिसम्बर 12, 2043	जून 22, 2044	
21	छोटी पनौती	वृश्चिक	अगस्त 30, 2044	दिसम्बर 07, 2046	
22	छोटी पनौती	मीन	मई 15, 2054	सितम्बर 01, 2054	
23	छोटी पनौती	मीन	फरवरी 06, 2055	अप्रैल 06, 2057	
24	साढे साती	कर्क	अगस्त 24, 2063	फरवरी 05, 2064	उदय
25	साढे साती	कर्क	मई 10, 2064	अक्टूबर 12, 2065	उदय
26	साढे साती	सिंह	अक्टूबर 13, 2065	फरवरी 03, 2066	शिखर
27	साढे साती	कर्क	फरवरी 04, 2066	जुलाई 02, 2066	उदय
28	साढे साती	सिंह	जुलाई 03, 2066	अगस्त 29, 2068	शिखर
29	साढे साती	कन्या	अगस्त 30, 2068	नवम्बर 04, 2070	अस्त

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	छोटी पनौती	वृश्चिक	फरवरी 06, 2073	मार्च 30, 2073	
31	छोटी पनौती	वृश्चिक	अक्टूबर 24, 2073	जनवरी 16, 2076	
32	छोटी पनौती	वृश्चिक	जुलाई 11, 2076	अक्टूबर 11, 2076	
33	छोटी पनौती	मीन	मार्च 20, 2084	मई 21, 2086	
34	छोटी पनौती	मीन	नवम्बर 10, 2086	फरवरी 07, 2087	
35	साढे साती	कर्क	जुलाई 03, 2093	अगस्त 18, 2095	उदय
36	साढे साती	सिंह	अगस्त 19, 2095	अक्टूबर 11, 2097	शिखर
37	साढे साती	कन्या	अक्टूबर 12, 2097	मई 02, 2098	अस्त
38	साढे साती	सिंह	मई 03, 2098	जून 19, 2098	शिखर
39	साढे साती	कन्या	जून 20, 2098	दिसम्बर 25, 2099	अस्त
40	साढे साती	कन्या	मार्च 18, 2100	सितम्बर 16, 2100	अस्त
41	छोटी पनौती	वृश्चिक	दिसम्बर 03, 2102	नवम्बर 29, 2105	



सबसे डिटेल कुंडली

बृहत् कुंडली | 250+ पेज | सिर्फ ₹399

अभी ऑर्डर करें

॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

शनि साढ़े साती: उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बड़े आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कड़ी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बड़ा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढ़े साती: शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य-संबंधी समस्या, चरित्र-हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा-तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पड़ सकता है। संभव है कि इस काल-खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घड़ी से निकाल सकता है।

शनि साढ़े साती: अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई-लिखाई पर थोड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे-धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल-खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाड़ी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली-भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोट: उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है और हम पाठकों से यह आलेख पढ़ने का अनुरोध करते हैं। सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

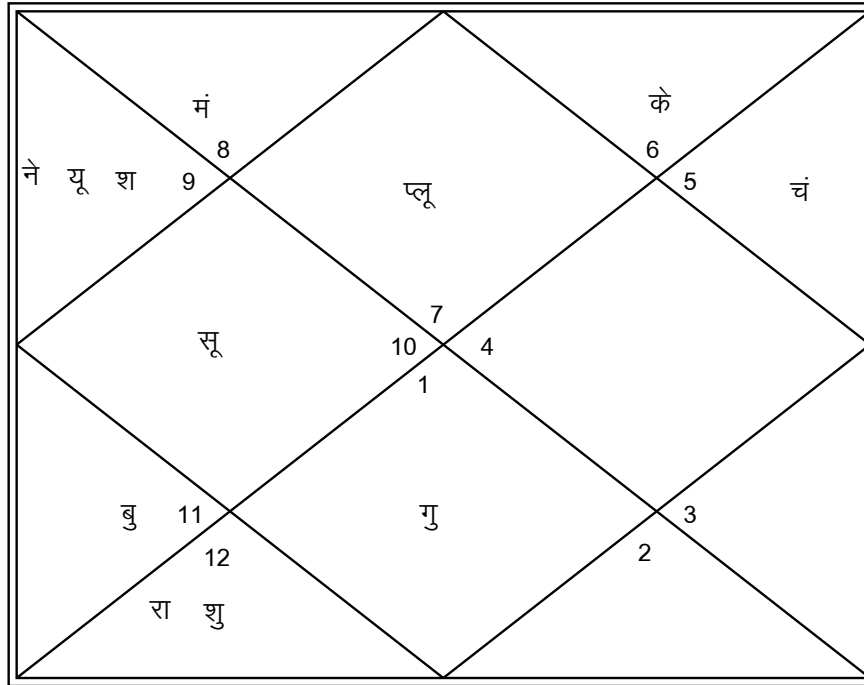
॥ कालसर्प दोष ॥

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थिति को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर है। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतः मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग-अलग जातकों पर अलग-अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पड़ता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन-किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषयोग का असर पड़ता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणाम: आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

लग्न चक्र:



फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

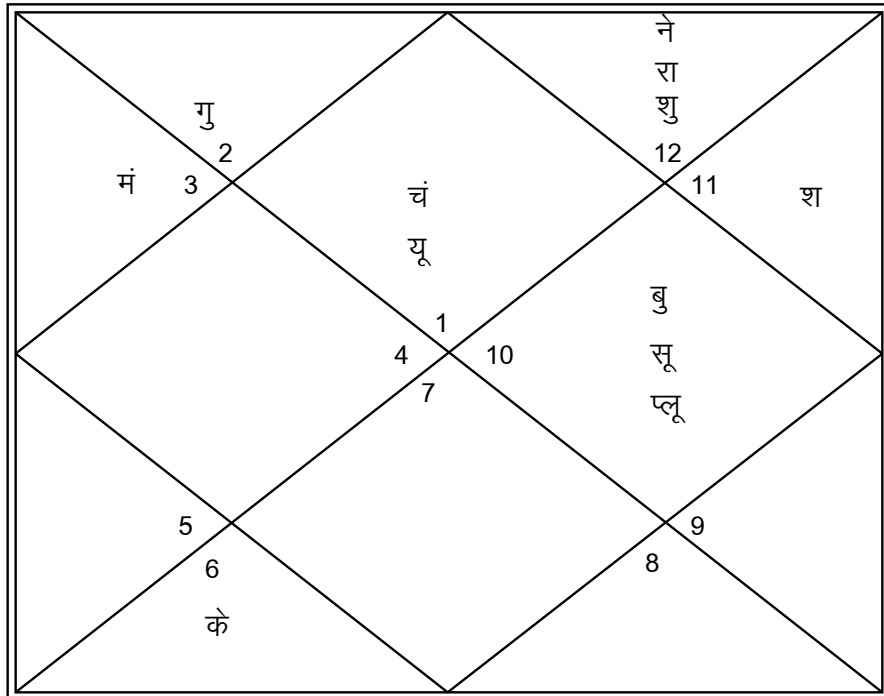
अभी चैट करें



॥ वर्षफल विवरण ॥

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
5 / 2 / 1988	जन्म दिनांक	5 / 2 / 2025
23:10:6	जन्म समय	10:49:16
शुक्रवार	जन्म दिन	बुधवार
Sindhuli	जन्म स्थान	Sindhuli
27	अक्षांश	27
85	रेखांश	85
00 : 01 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 01 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
23 : 08 : 58	स्थानीय औसत समय	10 : 48 : 08
06 : 45 : 20	सूर्योदय	06 : 44 : 39
17 : 44 : 51	सूर्यास्त	17 : 45 : 33
तुला	लग्न	मेष
शुक्र	लग्नस्वामी	मंगल
सिंह	राशि	मेष
सूर्य	राशि स्वामी	मंगल
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	भरणी
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
अतिगण्ड	योग	गुक्ल
विष्टि	करण	विष्टि
कुंभ	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कुंभ
023-41-25	अयनांश	024-12-25
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली



॥ वर्षफल विवरण ॥

मुन्था: 8 भाव

आपके लिए यह कठिन समय है। आपको अपने सगे संबंधियों को लेकर कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। कई बीमारियाँ हो सकती हैं। निकट रिश्तेदार की आकस्मिक मृत्यु भी संभव है। दुर्घटना का योग है। धन की, आत्मविश्वास की हानि होगी। मानसिक तनाव रहेगा। आपका स्थानांतरण प्रियजनों से दूर किसी अनजानी सी जगह हो सकता है।

फरवरी 5, 2025 – फरवरी 23, 2025 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 10

इस अवधि में आप बहुत क्रियाशील एवम् व्यस्त रहेंगे। व्यापार या नौकरी में सफलता प्राप्त करेंगे और अपने वरिष्ठ अधिकारियों के कृपाभाजन रहेंगे। यह समय आपकी कर्मठता का समय सिद्ध होगा। व्यापार के कारण सफलदायक यात्राएं करेंगे। सब लिहाज से यह समय काफी संतोषप्रद सिद्ध होगा। इस समय में आप अपनी सारी आर्थिक समस्याओं से छुटकारा पा जायेंगे।

फरवरी 23, 2025 – मार्च 26, 2025 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 1

इस अवधि में भी मिले जुले फल मिलेंगे। कई अच्छे अवसर मिलेंगे पर आप उनका पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्य के कारण परेशान रहेंगे। मित्र, परिवार और सहयोगियों के साथ बर्ताव में सर्तक रहें। यात्राएं सफलदायक नहीं होंगी इसलिये उनसे बचें। मां बाप का रूग्ण स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा।

मार्च 26, 2025 – अप्रैल 16, 2025 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 3

इस अवधि के दौरान आपकी वृत्ति साहसी रहेगी। यात्राएं सफलदायक रहेंगी। संचार माध्यमों के शुभ समाचार प्राप्त करेंगे। आपके रिश्तेदार, खास तौर पर भाई इस अवधि के दौरान खुशहाल रहेंगे। पार्थिव वस्तुओं की प्राप्ति भी संभव है। विरोधी आपका सामना भी नहीं कर पायेंगे। प्रयत्नों में सफलता सुनिश्चित रहेगी।

अप्रैल 16, 2025 – जून 10, 2025 दशा राहू

राहू भाव संख्या 12

इस अवधि में निवास स्थान या नौकरी का परिवर्तन संभावित है। भारी व्यय से आप व्यथित रहेंगे। अपने लोगों से ही झगड़े विवाद हो सकते हैं। यात्राएं थकाने वाली और सफलदायक नहीं रहेंगी। पारिवारिक सदस्य आपके प्रति उदासीन रहेंगे। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। दुष्ट मित्रों से सावधान रहें। वह आपकी प्रतिष्ठा पर आंच लायेंगे। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी चिन्ता का एक कारण रहेगा। अभी किसी यात्रा की योजना न बनाएं।

॥ वर्षफल विवरण ॥

जून 10, 2025 – जुलाई 28, 2025 दशा गुरु

गुरु भाव संख्या 2

इस अवधि के दौरान आय वृद्धि काफी होगी। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में आप पैसा रूपया छोड़ने से नहीं हिचकिचायेंगे। आप जन प्रिय रहेंगे। परिवार के सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। शत्रुओं का पराभव कर सकेंगे। वसीयत से लाभ भी शीघ्र प्राप्त होगा। कला कविता एवम् साहित्य में आपका शौक बढ़ा चढ़ा रहेगा। अपने रुचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे। साधारण तौर पर सब प्रकार का सुख भोगना सुनिश्चित है।

जुलाई 28, 2025 – सितम्बर 24, 2025 दशा शनि

शनि भाव संख्या 11

इस अवधि में आपकी सारी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप नए उद्यम शुरू करेंगे। मित्रों और हितैषियों से खूब मदद मिलेगी। इस अवधि में व्यापार द्वारा आपको अच्छा खासा लाभ होना चाहिए। निकट संबंधी के बारे में कोई अच्छी खबर मिल सकती है। सुदूर प्रदेशों के निवासियों से आपके अच्छे संबंध कायम होंगे। भ्रमण उपयोगी रहेगा। प्रणय संबंधों के लिए भी यह समय अच्छा है। परिवारजनों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा रहेगा।

सितम्बर 24, 2025 – नवम्बर 15, 2025 दशा बुध

बुध भाव संख्या 10

व्यापार या व्यवसाय में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार भी हो सकता है। इस अवधि के दौरान आप पूरी तरह कर्मठ रहेंगे। वरिष्ठ लोगों या सत्तावान व्यक्तियों के साथ आपके संबंधों में सुधार आयेगा। पारिवारिक माहौल संतोषप्रद रहेगा। आपको वाहन भी प्राप्त हो सकता है। विदेशों से अच्छी खबर मिलने की संभावना है। घर में किसी शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

नवम्बर 15, 2025 – दिसम्बर 06, 2025 दशा केतु

केतु भाव संख्या 6

व्यापार धन्धे में इस अवधि में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अगर नौकरी पेशा हैं तो नौकरी की हालतों में सुधार होगा। व्यापार के विस्तृत होने की संभावना है। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान हर क्षेत्र से आपको सम्मान मिलेगा। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। दुश्मनों की आपका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। अचानक यात्रा सौभाग्य वृद्धि करेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे प्रयास कर सौभाग्यकाल को पूरी तरह भुनाने के लिये यह श्रेयस्कर समय है।

दिसम्बर 06, 2025 – फरवरी 05, 2026 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 12

आप सुविधा और विलास के साधनों पर खर्च करेंगे। उच्च कोटि का वैवाहिक सुख भोगेंगे। फिर भी अच्छा होगा कि आप अपनी भोग वृत्ति पर अंकुश लगायें वरना आनन्द प्राप्त करने के बजाय परेशानी उठानी पड़ जायेगी। छोटी मोटी बीमारी परेशान करेगी। प्रणय संबंधों की गति धीमी रखें। विरोधी और प्रतिद्वन्दी नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। यद्यपि आप उनकी परवाह नहीं करेंगे फिर भी आप को सलाह दी जाती है कि ऐसा न करें। आर्थिक रूप से यह बुरा समय नहीं है पर खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार जन के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

शुक्र महादशा फल (जन्म से फरवरी 19, 1993)

शुक्र मीन आपके षष्ठ भाव में स्थित है:

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

सूर्य महादशा फल (फरवरी 19, 1993 से फरवरी 19, 1999)

सूर्य मकर आपके चतुर्थ भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपको मेहनत करनी पड़ेगी जो आप कर नहीं पायेंगे। लगातार किया गया कड़ा परिश्रम थका भी शीघ्र देगा और कार्य क्षमता भी कम हो जायेगी। बुरे कार्यों में प्रवृत्ति रहने की आपकी चेष्टा रहेगी। मां बाप का बुरा स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा। कार या कोईवाहन बहुत तेजी से न चलाएं।

चन्द्र महादशा फल (फरवरी 19, 1999 से फरवरी 19, 2009)

चन्द्र सिंह आपके एकादश भाव में स्थित है:

आपके मित्र और सहयोगी आपकी सहायता करेंगे। इस अवधि में आपकी महत्वाकांक्षा और इच्छाओं की पूर्ति होगी। किसी लाभप्रद सौदे से आप सम्बंधित रहेंगे। लम्बी यात्राओं की प्रबल संभावना है। सभी लिहाज से परिणाम बहुत अच्छे रहेंगे।

मंगल महादशा फल (फरवरी 19, 2009 से फरवरी 19, 2016)

मंगल वृश्चिक आपके द्वितीय भाव में स्थित है:

आर्थिक लाभ के लिये यह समय अच्छा नहीं है। परिवार के सदस्यों के कारण तनाव पैदा हो सकते हैं। छोटी छोटी बातों पर भी झगड़े हो सकते हैं। वाणी पर नियंत्रण रखें वरना परेशानी भुगतेंगे। अवांछित लोगों पर निर्भर रहना पड़ सकता है। व्यापार में घाटे या चोरी के कारण आर्थिक हानि होने की संभावना है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

राहू महादशा फल (फरवरी 19, 2016 से फरवरी 19, 2034)

राहू मीन आपके षष्ठ भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप अपने उद्यमों में काफी सफल रहेंगे। काम करने के हालात में सुधार होगा। पैसा साधारण रूप से आपके पास आयेगा। सरकार और सत्ताधारी व्यक्तियों द्वारा आप का सब काम पूरा कर दिया जायेगा। अपने विरोधियों का आप निश्चित रूप से पराभव कर देंगे। इस अवधि के मध्य में एक सुखद यात्रा अवश्य करेंगे। पारिवारिक वातावरण भी अच्छा रहेगा। नफे की सौदा होने की पूरी संभावना है। अगर आपने प्रार्थना की है तो आर्थिक साधन व रुपया पैसा अवश्य प्राप्त करेंगे। छोटी मोटी बीमारियां लगी रह सकती हैं।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

गुरु महादशा फल (फरवरी 19, 2034 से फरवरी 19, 2050)

गुरु मेष आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप वैवाहिक सुख भोगेंगे। व्यापार या नौकरी इत्यादि के विकासशील होने की अच्छी संभावनाएं रहेंगी। बहु प्रतीक्षित यात्रा करेंगे। परिवार का वातावरण भी सौमनस्यपूर्ण रहेगा। इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप निडर रहेंगे और शत्रुगण सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे। दर्शन व साहित्य में रुचि जागृत होगी। विद्वानों से सम्पर्क बढ़ेंगे। आप अत्यधिक सम्मानप्रिय व्यक्ति समझे जायेंगे और विख्यात होंगे।

शनि महादशा फल (फरवरी 19, 2050 से फरवरी 19, 2069)

शनि धनु आपके तृतीय भाव में स्थित है:

हर काम को सलीके से करने की आपकी बलवती इच्छा रहेगी। आपका विश्वास बहुत बढ़ा चढ़ा रहेगा। नौकरी व्यापार या व्यवसाय में उत्साहवर्धक परिणाम निश्चित रूप से सामने आएंगे। नए उद्यमों या व्यवसायों में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। आमदनी साधारण रूप से अच्छी रहेगी। पारिवारिक वातावरण बड़ा सौहार्दपूर्ण रहेगा। संचार माध्यमों से कोई अच्छी खबर मिल सकती है।

बुध महादशा फल (फरवरी 19, 2069 से फरवरी 19, 2086)

बुध कुंभ आपके पंचम भाव में स्थित है:

इस अवधि में अपनी पैनी विवेक बुद्धि और सही अंदाज लगाने की क्षमता के कारण आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी कल्पना अत्यधिक सक्रिय रहेगी। नये उद्यमों में निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे। यह समय प्रणय और रोमान्स के लिये भी अच्छा है। आपके सृजन बोध की सराहना की जायेगी। पारिवारिक सुख बढ़ा चढ़ा रहेगा। मित्र और शुभ चिन्तक पूरा सहारा देंगे। इस अवधि के दौरान आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। एक यादगार यात्रा होने की भी संभावना है।

केतु महादशा फल (फरवरी 19, 2086 से फरवरी 19, 2093)

केतु कन्या आपके द्वादश भाव में स्थित है:

दूसरों की सही सलाह पर ध्यान न देने की आपकी चेष्टा रह सकती है। गलत और पापपूर्ण कार्यों से संलग्न रहने की संभावना है। गलत निर्णय के कारण आप चिन्ताग्रस्त रह सकते हैं। इस अवधि में सनक और उन्माद से प्रेरित होकर काम न करें व आप गहरी मुसीबत में पड़ सकते हैं। वैसे इस अवधि में आप गूढ़ विज्ञान संबंधी कार्यों में प्रवृत्ति रह सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा।

॥ योगिनी दशा ॥

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	8. 7.84
अंत	8. 8.89
उल्	8. 7.84
सि	7. 9.85
सं	6. 1.87
मं	6. 3.87
पिं	6. 7.87
ध	6. 1.88
भ्र	6. 9.88
भद्रि	8. 8.89

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.89
अंत	8. 8.96
सि	16.11.90
सं	5. 6.92
मं	15. 8.92
पिं	4. 1.93
ध	4. 8.93
भ्र	14. 5.94
भद्रि	4. 5.95
उल्	8. 8.96

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.96
अंत	8. 8.04
सं	14. 4.98
मं	4. 7.98
पिं	14.12.98
ध	14. 8.99
भ्र	4. 7.00
भद्रि	14. 8.01
उल्	14.12.02
सि	8. 8.04

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.04
अंत	8. 8.05
मं	14. 7.04
पिं	3. 8.04
ध	3. 9.04
भ्र	13.10.04
भद्रि	3.12.04
उल्	3. 2.05
सि	13. 4.05
सं	8. 8.05

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.05
अंत	8. 8.07
पिं	13. 8.05
ध	13.10.05
भ्र	2. 1.06
भद्रि	12. 4.06
उल्	12. 8.06
सि	1. 1.07
सं	11. 6.07
मं	8. 8.07

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.07
अंत	8. 8.10
ध	1.10.07
भ्र	1. 2.08
भद्रि	1. 7.08
उल्	1. 1.09
सि	31. 7.09
सं	31. 3.10
मं	30. 4.10
पिं	8. 8.10

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.10
अंत	8. 8.14
भ्र	10.12.10
भद्रि	30. 6.11
उल्	29. 2.12
सि	9.12.12
सं	29.10.13
मं	9.12.13
पिं	1. 3.14
ध	8. 8.14

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.14
अंत	8. 8.19
भद्रि	11. 3.15
उल्	11. 1.16
सि	31.12.16
सं	10. 2.18
मं	30. 3.18
पिं	10. 7.18
ध	10.12.18
भ्र	8. 8.19

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.19
अंत	8. 8.25
उल्	30. 6.20
सि	29. 8.21
सं	29.12.22
मं	28. 2.23
पिं	28. 6.23
ध	28.12.23
भ्र	28. 8.24
भद्रि	8. 8.25

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.25
अंत	8. 8.32
सि	7.11.26
सं	27. 5.28
मं	6. 8.28
पिं	26.12.28
ध	26. 7.29
भ्र	6. 5.30
भद्रि	26. 4.31
उल्	8. 8.32

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.32
अंत	8. 8.40
सं	5. 4.34
मं	25. 6.34
पिं	5.12.34
ध	5. 8.35
भ्र	25. 6.36
भद्रि	4. 8.37
उल्	4.12.38
सि	8. 8.40

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.40
अंत	8. 8.41
मं	4. 7.40
पिं	24. 7.40
ध	24. 8.40
भ्र	4.10.40
भद्रि	24.11.40
उल्	24. 1.41
सि	3. 4.41
सं	8. 8.41

॥ योगिनी दशा ॥

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.41
अंत	8. 8.43
पिं	2. 8.41
ध	2.10.41
भ्र	22.12.41
भद्रि	1. 4.42
उल्	1. 8.42
सि	21.12.42
सं	31. 5.43
मं	8. 8.43

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.43
अंत	8. 8.46
ध	20. 9.43
भ्र	20. 1.44
भद्रि	20. 6.44
उल्	20.12.44
सि	20. 7.45
सं	20. 3.46
मं	20. 4.46
पिं	8. 8.46

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.46
अंत	8. 8.50
भ्र	30.11.46
भद्रि	19. 6.47
उल्	19. 2.48
सि	29.11.48
सं	19.10.49
मं	29.11.49
पिं	18. 2.50
ध	8. 8.50

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.50
अंत	8. 8.55
भद्रि	28. 2.51
उल्	28.12.51
सि	18.12.52
सं	28. 1.54
मं	20. 3.54
पिं	30. 6.54
ध	30.11.54
भ्र	8. 8.55

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.55
अंत	8. 8.61
उल्	19. 6.56
सि	18. 8.57
सं	18.12.58
मं	18. 2.59
पिं	18. 6.59
ध	18.12.59
भ्र	18. 8.60
भद्रि	8. 8.61

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.61
अंत	8. 8.68
सि	28.10.62
सं	18. 5.64
मं	28. 7.64
पिं	18.12.64
ध	18. 7.65
भ्र	28. 4.66
भद्रि	17. 4.67
उल्	8. 8.68

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.68
अंत	8. 8.76
सं	27. 3.70
मं	16. 6.70
पिं	26.11.70
ध	26. 7.71
भ्र	15. 6.72
भद्रि	25. 7.73
उल्	24.11.74
सि	8. 8.76

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.76
अंत	8. 8.77
मं	23. 6.76
पिं	13. 7.76
ध	13. 8.76
भ्र	23. 9.76
भद्रि	12.11.76
उल्	12. 1.77
सि	22. 3.77
सं	8. 8.77

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.77
अंत	8. 8.79
पिं	21. 7.77
ध	21. 9.77
भ्र	11.12.77
भद्रि	21. 3.78
उल्	21. 7.78
सि	11.12.78
सं	21. 5.79
मं	8. 8.79

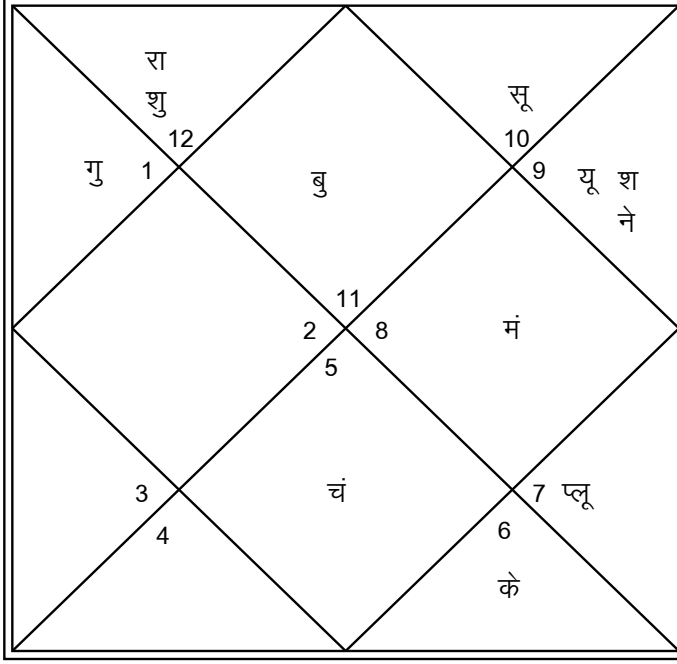
ध 3 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.79
अंत	8. 8.82
ध	10. 9.79
भ्र	10. 1.80
भद्रि	10. 6.80
उल्	10.12.80
सि	10. 7.81
सं	10. 3.82
मं	10. 4.82
पिं	8. 8.82

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.82
अंत	8. 8.86
भ्र	20.11.82
भद्रि	9. 6.83
उल्	9. 2.84
सि	19.11.84
सं	9.10.85
मं	19.11.85
पिं	8. 2.86
ध	8. 8.86

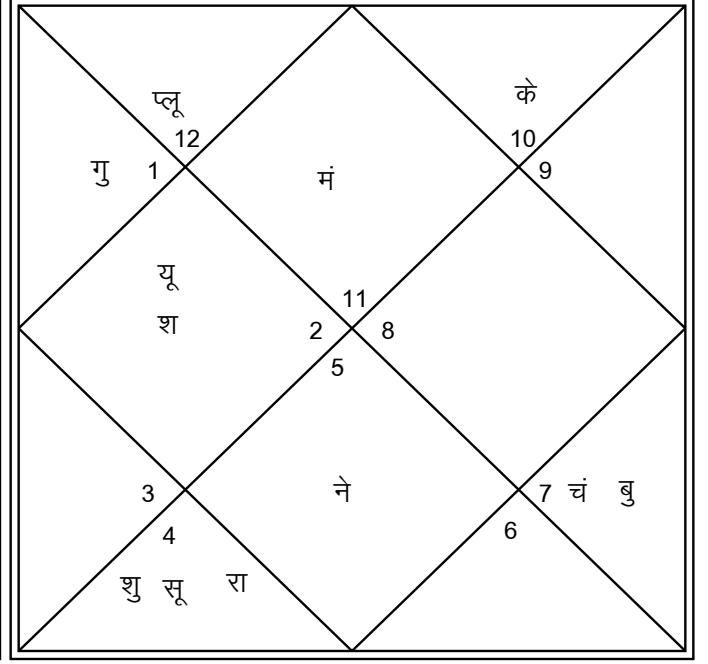
भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	8. 8.86
अंत	8. 8.91
भद्रि	18. 2.87
उल्	18.12.87
सि	8.12.88
सं	18. 1.90
मं	10. 3.90
पिं	20. 6.90
ध	20.11.90
भ्र	8. 8.91

॥ जैमिनी पद्धति – कारकांश एवं स्वांश ॥

कारकांश चक्र



स्वांश चक्र



कारक

कारक	स्थिर	चर
आत्म	सूर्य	मंगल
आमात्य	बुध	चंद्र
भ्रात	मंगल	सूर्य
मातृ	चंद्र	शनि
पितृ	गुरु	बुध
ज्ञाति	शनि	शुक्र
दारा	शुक्र	गुरु

अवस्था

ग्रह	जाग्रत	बलादि	दीप्तादि
सूर्य	जाग्रत	कुमार	स्वत
चंद्र	सुसुप्त	वृद्ध	खल
मंगल	जाग्रत	बाल	शान्त
बुध	जाग्रत	बाल	शान्त
गुरु	जाग्रत	बाल	स्वत
शुक्र	सुसुप्त	मृत	शान्त
शनि	जाग्रत	बाल	शान्त

॥ चरदशा ॥

चर महादशा

तुला 05 वर्ष	5. 2.88	5. 2.93
वृश्चिक 10 वर्ष	5. 2.93	5. 2.03
धनु 04 वर्ष	5. 2.03	5. 2.07

मकर 01 वर्ष	5. 2.07	5. 2.08
कुंभ 11 वर्ष	5. 2.08	5. 2.19
मीन 11 वर्ष	5. 2.19	5. 2.30

मेष 07 वर्ष	5. 2.30	5. 2.37
वृष 10 वर्ष	5. 2.37	5. 2.47
मिथुन 08 वर्ष	5. 2.47	5. 2.55

कर्क 11 वर्ष	5. 2.55	5. 2.66
सिंह 07 वर्ष	5. 2.66	5. 2.73
कन्या 07 वर्ष	5. 2.73	5. 2.80

चर अन्तरदशा

तुला 5 वर्ष		
वृश्चिक	5.2.88	5. 7.88
धनु	5.7.88	5.12.88
मकर	5.12.88	5. 5.89
कुंभ	5.5.89	5.10.89
मीन	5.10.89	5. 3.90
मेष	5.3.90	5. 8.90
वृष	5.8.90	5. 1.91
मिथुन	5.1.91	5. 6.91
कर्क	5.6.91	5.11.91
सिंह	5.11.91	5. 4.92
कन्या	5.4.92	5. 9.92
तुला	5.9.92	5. 2.93

वृश्चिक 10 वर्ष		
तुला	5.2.93	5.12.93
कन्या	5.12.93	5.10.94
सिंह	5.10.94	5. 8.95
कर्क	5.8.95	5. 6.96
मिथुन	5.6.96	5. 4.97
वृष	5.4.97	5. 2.98
मेष	5.2.98	5.12.98
मीन	5.12.98	5.10.99
कुंभ	5.10.99	5. 8.00
मकर	5.8.00	5. 6.01
धनु	5.6.01	5. 4.02
वृश्चिक	5.4.02	5. 2.03

धनु 4 वर्ष		
वृश्चिक	5.2.03	5. 6.03
तुला	5.6.03	5.10.03
कन्या	5.10.03	5. 2.04
सिंह	5.2.04	5. 6.04
कर्क	5.6.04	5.10.04
मिथुन	5.10.04	5. 2.05
वृष	5.2.05	5. 6.05
मेष	5.6.05	5.10.05
मीन	5.10.05	5. 2.06
कुंभ	5.2.06	5. 6.06
मकर	5.6.06	5.10.06
धनु	5.10.06	5. 2.07

फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

अभी चैट करें



॥ चरदशा ॥

मकर 1 वर्ष		
धनु	5.2.07	5. 3.07
वृश्चिक	5.3.07	5. 4.07
तुला	5.4.07	5. 5.07
कन्या	5.5.07	5. 6.07
सिंह	5.6.07	5. 7.07
कर्क	5.7.07	5. 8.07
मिथुन	5.8.07	5. 9.07
वृष	5.9.07	5.10.07
मेष	5.10.07	5.11.07
मीन	5.11.07	5.12.07
कुंभ	5.12.07	5. 1.08
मकर	5.1.08	5. 2.08

कुंभ 11 वर्ष		
मीन	5.2.08	5. 1.09
मेष	5.1.09	5.12.09
वृष	5.12.09	5.11.10
मिथुन	5.11.10	5.10.11
कर्क	5.10.11	5. 9.12
सिंह	5.9.12	5. 8.13
कन्या	5.8.13	5. 7.14
तुला	5.7.14	5. 6.15
वृश्चिक	5.6.15	5. 5.16
धनु	5.5.16	5. 4.17
मकर	5.4.17	5. 3.18
कुंभ	5.3.18	5. 2.19

मीन 11 वर्ष		
मेष	5.2.19	5. 1.20
वृष	5.1.20	5.12.20
मिथुन	5.12.20	5.11.21
कर्क	5.11.21	5.10.22
सिंह	5.10.22	5. 9.23
कन्या	5.9.23	5. 8.24
तुला	5.8.24	5. 7.25
वृश्चिक	5.7.25	5. 6.26
धनु	5.6.26	5. 5.27
मकर	5.5.27	5. 4.28
कुंभ	5.4.28	5. 3.29
मीन	5.3.29	5. 2.30

मेष 7 वर्ष		
वृष	5.2.30	5. 9.30
मिथुन	5.9.30	5. 4.31
कर्क	5.4.31	5.11.31
सिंह	5.11.31	5. 6.32
कन्या	5.6.32	5. 1.33
तुला	5.1.33	5. 8.33
वृश्चिक	5.8.33	5. 3.34
धनु	5.3.34	5.10.34
मकर	5.10.34	5. 5.35
कुंभ	5.5.35	5.12.35
मीन	5.12.35	5. 7.36
मेष	5.7.36	5. 2.37

वृष 10 वर्ष		
मेष	5.2.37	5.12.37
मीन	5.12.37	5.10.38
कुंभ	5.10.38	5. 8.39
मकर	5.8.39	5. 6.40
धनु	5.6.40	5. 4.41
वृश्चिक	5.4.41	5. 2.42
तुला	5.2.42	5.12.42
कन्या	5.12.42	5.10.43
सिंह	5.10.43	5. 8.44
कर्क	5.8.44	5. 6.45
मिथुन	5.6.45	5. 4.46
वृष	5.4.46	5. 2.47

मिथुन 8 वर्ष		
वृष	5.2.47	5.10.47
मेष	5.10.47	5. 6.48
मीन	5.6.48	5. 2.49
कुंभ	5.2.49	5.10.49
मकर	5.10.49	5. 6.50
धनु	5.6.50	5. 2.51
वृश्चिक	5.2.51	5.10.51
तुला	5.10.51	5. 6.52
कन्या	5.6.52	5. 2.53
सिंह	5.2.53	5.10.53
कर्क	5.10.53	5. 6.54
मिथुन	5.6.54	5. 2.55

कर्क 11 वर्ष		
मिथुन	5.2.55	5. 1.56
वृष	5.1.56	5.12.56
मेष	5.12.56	5.11.57
मीन	5.11.57	5.10.58
कुंभ	5.10.58	5. 9.59
मकर	5.9.59	5. 8.60
धनु	5.8.60	5. 7.61
वृश्चिक	5.7.61	5. 6.62
तुला	5.6.62	5. 5.63
कन्या	5.5.63	5. 4.64
सिंह	5.4.64	5. 3.65
कर्क	5.3.65	5. 2.66

सिंह 7 वर्ष		
कन्या	5.2.66	5. 9.66
तुला	5.9.66	5. 4.67
वृश्चिक	5.4.67	5.11.67
धनु	5.11.67	5. 6.68
मकर	5.6.68	5. 1.69
कुंभ	5.1.69	5. 8.69
मीन	5.8.69	5. 3.70
मेष	5.3.70	5.10.70
वृष	5.10.70	5. 5.71
मिथुन	5.5.71	5.12.71
कर्क	5.12.71	5. 7.72
सिंह	5.7.72	5. 2.73

कन्या 7 वर्ष		
तुला	5.2.73	5. 9.73
वृश्चिक	5.9.73	5. 4.74
धनु	5.4.74	5.11.74
मकर	5.11.74	5. 6.75
कुंभ	5.6.75	5. 1.76
मीन	5.1.76	5. 8.76
मेष	5.8.76	5. 3.77
वृष	5.3.77	5.10.77
मिथुन	5.10.77	5. 5.78
कर्क	5.5.78	5.12.78
सिंह	5.12.78	5. 7.79
कन्या	5.7.79	5. 2.80

॥ गोचर फल (21-2-2025) ॥

सूर्य कुंभराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप जीवन का बड़े उत्साह और उल्लास से स्वागत करेंगे प्रणय प्रेम संबंधों के लिये यह समय श्रेयस्कर नहीं है। बहुत अधिक सोच विचार हानिकर हो सकता है इसलिये इससे आप बचें। अचानक यात्रा की संभावना भी हो सकती है।

चन्द्र वृश्चिकराशि में आपके दूसरे भाव में स्थित है:

आप बेहद प्रसन्न रहेंगे। इस अवधि में आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। परिवार में मेल-जोल रहेगा और परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार रहेगा। मित्र और सहयोगी काफी सहायक सिद्ध होंगे। यात्राएं शुभ सिद्ध होंगी। इस समय का जितना सदुपयोग करेंगे उतना ही अच्छा रहेगा।

मंगल मिथुनराशि में आपके नौवें भाव में स्थित है:

बड़े बूढ़ों से सहयोग प्राप्त करेंगे। सुदूर स्थलों तक की गई लम्बी यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आमदनी बढ़ेगी और आय के नये स्रोत प्राप्त होंगे। यद्यपि खर्च भी बढ़ेंगे लेकिन आमदनी से अधिक नहीं होंगे। सट्टे के द्वारा आय होने की भी संभावना है। इस समय का पूरा सदुपयोग करें।

**क्या आपकी कुंडली में है राजयोग?
जानने के लिए**

AstroSage AI से करें कंसल्ट

फ्री चैट



॥ गोचर फल (21-2-2025) ॥

बुध कुंभराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

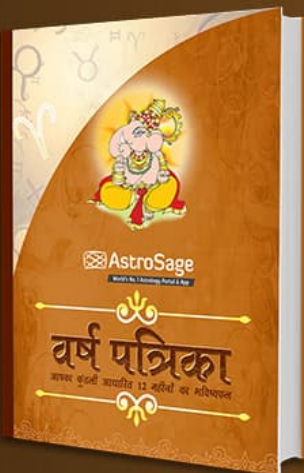
इस अवधि में अपनी पैनी विवेक बुद्धि और सही अंदाज लगाने की क्षमता के कारण आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी कल्पना अत्यधिक सक्रिय रहेगी। नये उद्यमों में निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे। यह समय प्रणय और रोमान्स के लिये भी अच्छा है। आपके सृजन बोध की सराहना की जायेगी। पारिवारिक सुख बढ़ा चढ़ा रहेगा। मित्र और शुभ चिन्तक पूरा सहारा देंगे। इस अवधि के दौरान आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। एक यादगार यात्रा होने की भी संभावना है।

गुरु वृशभराशि में आपके आठवें भाव में स्थित है:

मानसिक चिन्ताओं के कारण तकलीफ होगी। शारीरिक रोग भी घेरे रह सकते हैं। दिमाग को शांति नहीं मिलेगी। परिवार जनों का बर्ताव भी फर्क रहेगा। लेकिन गूढ़ विान और परामनोविान में आपकी रुचि जागृत होगी। इन क्षेत्रों के कुछ अनुभव भी प्राप्त होंगे। अचानक धन लाभ होने की भी संभावना है। पूंजी निवेश का प्रयत्न न करें क्योंकि मन चाहा परिणाम प्राप्त नहीं होगा। मित्र व सहयोगी अपना वचन नहीं निभायेंगे। असुरक्षा की भावना सदैव विद्यमान रहेगी।

शुक्र मीनराशि में आपके छठे भाव में स्थित है:

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।



आपके अगले 12
महीने की पूरी भविष्यवाणी
सिर्फ एक क्लिक दूर

अभी ऑर्डर करें

॥ गोचर फल (21-2-2025) ॥

शनि कुंभराशि में आपके पांचवें भाव में स्थित है:

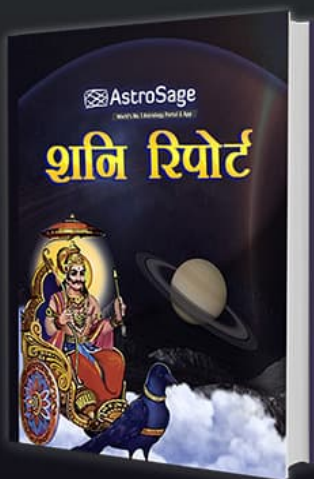
आपकी सृजनात्मक क्षमता इस अवधि में छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। इस मामले में अधिक ध्यान देने की जरूरत है जिससे आप सही निर्णय ले सकें। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। मित्र व सहयोगी अपना वचन नहीं निभाएंगे। झूठी आशाओं पर निर्भर करना ठीक नहीं। यात्राएं सफलदायक नहीं होगी। आर्थिक समस्याएं दिमागी शांति को भंग करेगी। जोखिम उठाने वाली प्रवृत्तियों पर पूरी तरह अंकुश लगाकर रखें।

राहु मीनराशि में आपके छठे भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप अपने उद्यमों में काफी सफल रहेंगे। काम करने के हालात में सुधार होगा। पैसा साधारण रूप से आपके पास आयेगा। सरकार और सत्ताधारी व्यक्तियों द्वारा आप का सब काम पूरा कर दिया जायेगा। अपने विरोधियों का आप निश्चित रूप से पराभव कर देंगे। इस अवधि के मध्य में एक सुखद यात्रा अवश्य करेंगे। पारिवारिक वातावरण भी अच्छा रहेगा। नफे की सौदा होने की पूरी संभावना है। अगर आपने प्रार्थना की है तो आर्थिक साधन व रुपया पैसा अवश्य प्राप्त करेंगे। छोटी मोटी बीमारियां लगी रह सकती हैं।

केतु कन्याराशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

दूसरों की सही सलाह पर ध्यान न देने की आपकी चेष्टा रह सकती है। गलत और पापपूर्ण कार्यों से संलग्न रहने की संभावना है। गलत निर्णय के कारण आप चिन्ताग्रस्त रह सकते हैं। इस अवधि में सनक और उन्माद से प्रेरित होकर काम न करें व आप गहरी मुसीबत में पड़ सकते हैं। वैसे इस अवधि में आप गूढ़ विज्ञान संबंधी कार्यों में प्रवृत्ति रह सकते हैं। इस अवधि के दौरान आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा।



शनि को सुधारें

शनि रिपोर्ट पाएं

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

सूर्य आपके चौथे भाव में स्थित है:

यदि सूर्य शुभ है तो जातक बुद्धिमान, दयालु और अच्छा प्रशासक होगा। उसके पास आमदनी का स्थिर श्रोत होगा। ऐसा जातक मरने के बाद अपने वंशजों के लिए बहुत धन और बड़ी विरासत छोड़ जाता है। यदि चंद्रमा भी सूर्य के साथ चौथे भाव में स्थित है तो जातक किसी नए शोध के माध्यम से बहुत धन अर्जित करेगा। ऐसे में चौथे भाव या दसम भाव का बुध जातक को प्रसिद्ध व्यापारी बनाता है। यदि सूर्य के साथ बृहस्पति भी चौथे भाव में स्थित है तो जातक सोने और चांदी के व्यापार से अच्छा मुनाफा कमाता है। यदि चौथे भाव में सूर्य अशुभ है तो जातक लालची होगा। जातक को चोरी करने और दूसरों को नुकसान पहुंचाने में मजा आता है। यह प्रवृत्ति अंततः बहुत बुरे परिणाम को जन्म देती है। यदि शनि सातवें भाव में हो तो जातक को रतौंधी रोग हो सकता है। यदि सूर्य चौथे भाव में पीडित हो और मंगल दसम भाव में हो तो जातक की आंखों में दोष हो सकता है लेकिन उसकी किस्मत कमजोर नहीं होगी। यदि अशुभ सूर्य चतुर्थ भाव में हो साथ ही चंद्रमा पहले या दूसरे भाव में हो और शुक्र पंचम भाव तथा शनि सातवें भाव में हो तो जातक नपुंसक हो सकता है।

उपाय

1) जरतमंद और अंधे लोगों को दान दें और खाना बांटें।
2) लोहे और लकड़ी के साथ जुघ व्यापार न करें।
3) सोने, चांदी और कपड़े से सम्बंधित व्यापार, लाभकारी रहेंगे।



एस्ट्रोसेज शॉप

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी



परामर्श



॥ लालकिताब फलकथन ॥

चन्द्र आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

यह घर बृहस्पति और शनि से पूरी तरह प्रभावित होता है। इस घर में स्थित हर ग्रह अपने शत्रु ग्रहों और उनके साथ जुड़ी बातों को नष्ट कर देता है। इस प्रकार यहां स्थित चंद्रमा अपने शत्रु केतू की चीजों को नष्ट कर देता है जैसे जातक के बेटे आदि को। यहां चंद्रमा को अपने शत्रुओं शनि और केतू की संयुक्त शक्ति का सामना करना पड़ता है, जिससे चंद्रमा कमजोर होता है। ऐसे में यदि केतू चौथे भाव में स्थित है तो जातक की मां का जीवन खतरे में पड़ेगा। बुध से जुड़े व्यापार भी हानिप्रद साबित होंगे। शनिवार के दिन से घर का निर्माण या घर की खरीदी चंद्रमा के शत्रु को बलवान बनाते हैं जो जातक के लिए विनाशकारी साबित होगा। आधी रात के बाद कन्यादान और शुक्रवार के दिन किसी भी शादी समारोह में शामिल होना जातक के भाग्य को नुकसान पहुंचाएगा।

उपाय

- 1) भैरव मंदिर में दूध बांटे और दूसरों को उदारतापूर्वक दूध का दान करें।
- 2) सुनिश्चित करें कि दादी अपने पोते को न देखने पाए।
- 3) दूध पीने से पहले सोने के एक टुकड़े को आग में गरम करें और दूध के गिलास में डालकर बुझाएं, इसके बाद दूध पिएं।
- 4) 125 पीस पेड़े मिठाइयां नदी में बहाएं।

मंगल आपके दूसरे भाव में स्थित है:

दूसरे भाव में स्थित मंगल वाला जातक आमतौर पर अपने माता पिता की बड़ी संतान होता है अन्यथा उसके साथ बड़े के जैसे बर्ताव किया जाएगा। लेकिन रहने एक छोटे भाई की तरह रहना और बर्ताव करना जातक के बहुत फायदेमंद और कई बुराइयों को अपने आप नष्ट करता है। इस घर का मंगल जातक को ससुराल से बहुत धनसंपदा दिलवाता है। यहां पर स्थित अशुभ मंगल ग्रह जातक को इंसान के प में दूसरों के लिए साँप सदृश बनाता है और यह स्थिति किसी युद्ध या झगड़े में जातक की मृत्यु का कारण बनता है। दूसरे घर में बुध के साथ स्थित मंगल जातक की इच्छा शक्ति को कमजोर और उसके महत्त्व को कमजोर करने वाला बनाता है।

उपाय

- 1) चंद्रमा से जुड़े व्यवसाय जैसे कपड़े का व्यापार आदि करने से चंद्रमा मजबूत होता है जिससे जातक को ऐसे व्यापार में बड़ी समृद्धि मिलती है।
- 2) सुनिश्चित करें कि आपके ससुराल वाले आम लोगों के लिए पीने के पानी की सुविधा और व्यवस्था करें।
- 3) घर में हिरण त्वचा रखें।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

बुध आपके पांचवें भाव में स्थित है:

इस घर में बुध जातक को खुश, अमीर और बुद्धिमान बनाता है। जातक के मुह से अचानक निकली बातें सच हो जाया करेंगी। यह स्थिति और भी बेहतर होगी यदि चंद्रमा या कोई पुरुष ग्रह तीसरे, पांचवें, नौवें या ग्यारहवें घर में स्थित हो। लेकिन यदि चंद्रमा और बृहस्पति अच्छे भावों में न हों तो बुध हानिकारक हो जाता है।

उपाय

- 1) धन प्राप्त करने के लिए सफेद धागे में तांबे का एक सिक्का पहनें।
- 2) जीवनसाथी की प्रसन्नता और अच्छी किस्मत लिए गायों की सेवा करें।
- 3) गोमुखी घर सामने संकीर्ण और अंत में व्यापक) अत्यधिक शुभ साबित होगा जबकि शेरमुखी घर सामने व्यापक और अंत में संकरा) अत्यधिक विनाशकारी साबित होगा।

गुरु आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवां घर शुक्र का होता है, अतः यह मिश्रित परिणाम देगा। जातक का भाग्योदय शादी के बाद होगा और जातक धार्मिक कार्यों में शामिल होगा। घर के मामले में मिलने वाला अच्छा परिणाम चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा। जातक देनदार नहीं हो सकता है लेकिन उसके अच्छे बच्चे होंगे। यदि सूर्य पहले भाव में हो तो जातक एक अच्छा ज्योतिषी और आराम पसंद होगा। लेकिन यदि बृहस्पति सातवें भाव में नीच का हो और शनि नौवें भाव में हो तो जातक चोर हो सकता है। यदि बुध नौवें भाव में हो तो जातक के वैवाहिक जीवन परेशानियों से भरा होगा। यदि बृहस्पति नीच का हो तो जातक को भाइयों से सहयोग नहीं मिलेगा साथ ही वह सरकार के समर्थन से भी वंचित रह जाएगा। सातवें घर में बृहस्पति पिता के साथ मतभेद का कारण बनता है। ऐसे में जातक को चाहिए कि वह कभी भी किसी को कपड़े दान न करे, अन्यथा वह बड़ी गरीबी की चपेट में आ जाएगा।

उपाय

- 1) भगवान शिव की पूजा करें।
- 2) घर में किसी भी देवता की मूर्ति न रखें।
- 3) हमेशा अपने साथ किसी पीले कपड़े में बांध कर सोना रखें।
- 4) पीले कपड़े पहने हुए साधु और घड़ीयों से दूर रहें।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

शुक्र आपके छठे भाव में स्थित है:

यह घर बुध और केतू का माना गया है जो एक दूसरे के शत्रु हैं। लेकिन शुक्र दोनों का मित्र है। इस घर में शुक्र नीच का होता है। लेकिन यदि जातक विपरीत लिंगी को प्रसन्न रखता है और सारे और सुविधा उपलब्ध करवाता है तो उसके धन और पैसे में वृद्धि होगी। जातक की पत्नी को पुरुषों के जैसे कपड़े नहीं पहनने चाहिए और न ही पुरुषों के जैसे बाल रखने चाहिए अन्यथा गरीबी बढ़ती है। ऐसे जातक को उसी से विवाह करना चाहिए जिसके भाई हों। इसके अलावा, जातक कोई भी पूरा किए बिना काम बीच में नहीं छोड़ता।

उपाय

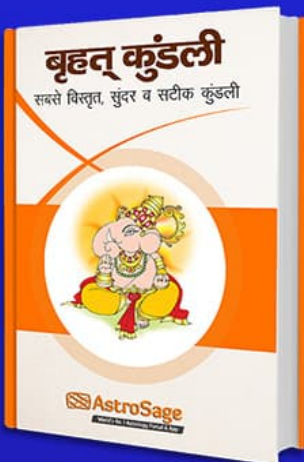
- 1) पत्नी के बालों में सोने की हेयर क्लिप का उपयोग करवाएं।
- 2) खयाल रखें कि पत्नी नंगे पैर न चले।
- 3) निजी अंगों को लाल दवा से धोएं।

शनि आपके तीसरे भाव में स्थित है:

इस घर में शनि अच्छा परिणाम देता है। यह घर मंगल ग्रह का पक्का घर है। जब केतु अपने इस घर को देखता है तो यहां बैठा शनि बहुत अच्छे परिणाम देता है। जातक स्वस्थ, बुद्धिमान और बहुत सरल स्वभाव का होता है। यदि जातक धनवान होगा तो उसके घर में पुरुष सदस्यों की संख्या कम होगी। गरीब होने की दशा में परिणाम उल्टा होगा। यदि जातक शराब और मांशाहार से दूर रहता है तो वह लम्बे और स्वस्थ जीवन का आनंद उठाएगा।

उपाय

- 1) तीन कुत्तों की सेवा करें।
- 2) आँखों की दवाएं मुफ्त बांटें।
- 3) घर में एक कमरे में हमेशा अंधेरा रखना बहुत फायदेमंद साबित होगा।



सबसे डिटेल कुंडली

बृहत् कुंडली | 250+ पेज | सिर्फ ₹399

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

राहु आपके छठे भाव में स्थित है:

इस घर बुध या केतु से प्रभावित होता है। राहु यहां उच्च का होता है और अच्छे परिणाम देता है। जातक सभी प्रकार की झंझटों या मुसीबतों के मुक्त होगा। जातक कपड़ों पर पैसा खर्च करेगा। जातक बुद्धिमान और विजेता होगा। जब राहु अशुभ हो तो वह अपने भाइयों या दोस्तों को नुकसान पहुंचाएगा। जब बुध या मंगल ग्रह बारहवें भाव में हों तो राहु बुरा परिणाम देता है। जातक विभिन्न बीमारियों या धनहानि से ग्रस्त होता है। किसी काम पर जाते समय छींक का होना जातक के लिए अशुभफलदायी होगा।

उपाय

- 1) एक काला कुत्ता पालें।
- 2) अपनी जेब में काला सुरमा रखें।
- 3) भाइयों ६ बहनों को कभी नुकसान न पहुंचाएं।

केतु आपके बारहवें भाव में स्थित है:

यहाँ केतु को उच्च का माना जाता है। जातक अमीर होगा, बड़ा पद प्राप्त करेगा, और अच्छे कामों को समर्पित होगा। यदि राहु छठवें भाव में बुध के साथ हो तो बेहतर परिणाम मिलते हैं। जातक को सभी तरह के लाभ और विलासिता की चीजों की प्राप्ति होती है। यदि 12वें घर में स्थित केतु अशुभ है तो जातक किसी निस्संतान व्यक्ति से भूमि खरीदता है और खुद भी निस्संतान हो जाता है। यदि जातक किसी कुत्ते को मार देता है तो केतु हानिकर परिणाम देता है। यदि दूसरे भाव में चंद्रमा, शुक्र या मंगल ग्रह हों तो केतु हानिकर परिणाम देता है।

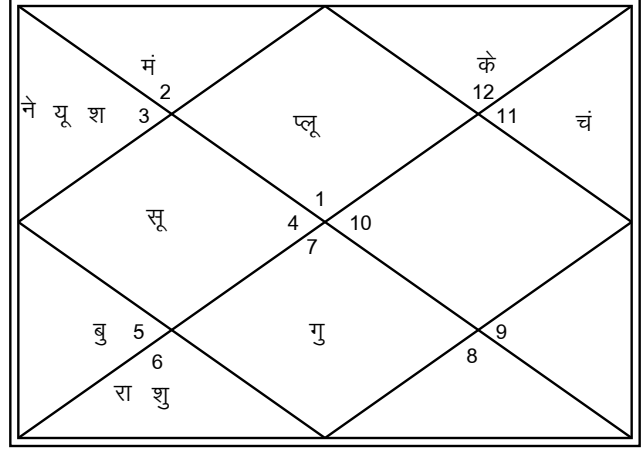
उपाय

- 1) भगवान गणेश की पूजा करें।
- 2) चरित्र ढीला न रखें।
- 3) एक कुत्ता पालें।
- 4) रात में अच्छी नींद के लिए तकिये के नीचे खांड और सौंफ रखें।

॥ लाल किताब गणना ॥

नाम	Niresh Sir	सूर्योदय	06. 45. 20	दशा भोग्य	VEN 5 Y 0 M 13 D
लिंग	Male	रेखांश	85.58.E	तिथि	17. 44. 51
दिनांक	5.2.1988	अक्षांश	27.15.N	योग	अतिगण्ड
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Sindhuli	लग्न	तुला
समय	23.10.6	अयनांश	023-41-25	राशि	सिंह
साम्पातिक काल	08.09.17	अयनांश नाम	लाहिरी	नक्षत्र	पू०फाल्गुनी-3
				नक्षत्र स्वामी	शुक्र

लग्न चक्र



लाल किताब ग्रह स्थिति					
ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	नेक / मंदा
सूर्य	कर्क	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
चंद्र	कुंभ	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
मंगल	वृषभ	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
बुध	सिंह	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
गुरु	तुला	-----	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
शुक्र	कन्या	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
शनि	मिथुन	-----	हाँ	नहीं	नेक / शुभ
राहु	कन्या	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
केतु	मीन	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष		गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	05/02/1988	आरम्भ	05/02/1994	आरम्भ	05/02/2000	आरम्भ	05/02/2003	आरम्भ	05/02/2009	आरम्भ	05/02/2011
अंत	05/02/1994	अंत	05/02/2000	अंत	05/02/2003	अंत	05/02/2009	अंत	05/02/2011	अंत	05/02/2012
राहु	05/02/1990	मंगल	05/02/1996	शनि	05/02/2001	केतु	05/02/2005	सूर्य	05/10/2009	गुरु	05/06/2011
बुध	05/02/1992	केतु	05/02/1998	राहु	05/02/2002	गुरु	05/02/2007	चन्द्र	05/06/2010	सूर्य	05/10/2011
शनि	05/02/1994	राहु	05/02/2000	केतु	05/02/2003	सूर्य	05/02/2009	मंगल	05/02/2011	चन्द्र	05/02/2012
शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष		शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
आरम्भ	05/02/2012	आरम्भ	05/02/2015	आरम्भ	05/02/2021	आरम्भ	05/02/2023	आरम्भ	05/02/2029	आरम्भ	05/02/2035
अंत	05/02/2015	अंत	05/02/2021	अंत	05/02/2023	अंत	05/02/2029	अंत	05/02/2035	अंत	05/02/2038
मंगल	05/02/2013	मंगल	05/02/2017	चन्द्र	05/10/2021	राहु	05/02/2025	मंगल	05/02/2031	शनि	05/02/2036
सूर्य	05/02/2014	शनि	05/02/2019	मंगल	05/06/2022	बुध	05/02/2027	केतु	05/02/2033	राहु	05/02/2037
चन्द्र	05/02/2015	शुक्र	05/02/2021	गुरु	05/02/2023	शनि	05/02/2029	राहु	05/02/2035	केतु	05/02/2038
गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष		शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
आरम्भ	05/02/2038	आरम्भ	05/02/2044	आरम्भ	05/02/2046	आरम्भ	05/02/2047	आरम्भ	05/02/2050	आरम्भ	05/02/2056
अंत	05/02/2044	अंत	05/02/2046	अंत	05/02/2047	अंत	05/02/2050	अंत	05/02/2056	अंत	05/02/2058
केतु	05/02/2040	सूर्य	05/10/2044	गुरु	05/06/2046	मंगल	05/02/2048	मंगल	05/02/2052	चन्द्र	05/10/2056
गुरु	05/02/2042	चन्द्र	05/06/2045	सूर्य	05/10/2046	सूर्य	05/02/2049	शनि	05/02/2054	मंगल	05/06/2057
सूर्य	05/02/2044	मंगल	05/02/2046	चन्द्र	05/02/2047	चन्द्र	05/02/2050	शुक्र	05/02/2056	गुरु	05/02/2058
शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष		गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
आरम्भ	05/02/2058	आरम्भ	05/02/2064	आरम्भ	05/02/2070	आरम्भ	05/02/2073	आरम्भ	05/02/2079	आरम्भ	05/02/2081
अंत	05/02/2064	अंत	05/02/2070	अंत	05/02/2073	अंत	05/02/2079	अंत	05/02/2081	अंत	05/02/2082
राहु	05/02/2060	मंगल	05/02/2066	शनि	05/02/2071	केतु	05/02/2075	सूर्य	05/10/2079	गुरु	05/06/2081
बुध	05/02/2062	केतु	05/02/2068	राहु	05/02/2072	गुरु	05/02/2077	चन्द्र	05/06/2080	सूर्य	05/10/2081
शनि	05/02/2064	राहु	05/02/2070	केतु	05/02/2073	सूर्य	05/02/2079	मंगल	05/02/2081	चन्द्र	05/02/2082
शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष							
आरम्भ	05/02/2082	आरम्भ	05/02/2085	आरम्भ	05/02/2091						
अंत	05/02/2085	अंत	05/02/2091	अंत	05/02/2093						
मंगल	05/02/2083	मंगल	05/02/2087	चन्द्र	05/10/2091						
सूर्य	05/02/2084	शनि	05/02/2089	मंगल	05/06/2092						
चन्द्र	05/02/2085	शुक्र	05/02/2091	गुरु	05/02/2093						

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य मकर राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की शत्रु राशि है। सूर्य ग्यारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में चौथे घर में स्थित है। सूर्यदृष्टि दसवें घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि सूर्य पर है।

यहां स्थित सूर्य आपको आर्थिक प से समृद्धशाली बना सकता है, क्योंकि यह आपके भीतर बचत करने की प्रवृत्ति देगा। आप देखने में पवान तो हो सकते हैं लेकिन कुछ चिन्ताएं भी आपको घेरे रह सकती हैं। यहां स्थित सूर्य माता पिता की सेवा से वंचित करवाता है। या तो आप दूर रहने के कारण माता पिता की सेवा नहीं कर पाएंगे या फिर साथ रहकर आपसी मनटाव से ग्रस्त रह सकते हैं।

सूर्य की यह स्थिति भाइयों के आपसी सद्भाव में बाधक बनती है। लेकिन यह स्थिति आपको किसी गुप्त विद्या का ज्ञान दे सकती है। हो सकता है कि आप अपनी जन्मभूमि को अधिक महत्त्व न दे पाएं लेकिन फिर भी आप किसी को हानि पहुंचाने से डरेंगे। आपको सोने चांदी के व्यापार से लाभ मिलेगा। आपकी अधिकतर यात्राएं भी लाभकारी सिद्ध होंगी।

यदि आप कुछ नया करने की कोशिश करेंगे, कुछ नया बनाएंगे या शोध करेंगे तो यह आपके लिए लाभप्रद रहेगा। कोई भी बुरी लत न लगने दें अन्यथा आपको अपनी बुरी लत को छोड़ने में बड़ी कठिनाई होगी। आपका ससुराल पक्ष कुछ हद तक समस्याग्रस्त रह सकता है। आपको भी आंखों से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। आपको चाहिए कि लालच को आने पास भी न फटकने दें अन्यथा आर्थिक संकट परेशान कर सकता है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र सिंह राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की मित्र राशि है। चन्द्र दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में ग्यारहवें घर में स्थित है। चन्द्रदृष्टि पांचवें घरावर आहे बुध,गुरु की पूर्ण दृष्टि चन्द्र पर है।

इस भाव में स्थित चन्द्रमा आपके स्वभाव में चंचलता दे सकता है। फिर भी आप बुद्धिजीवियों की श्रेणी में गिने जाएंगे। आपको परदेश में रहना या विदेश जाना बहुत पसंद होगा। आप मंहगीमंहगी गाड़ियों का सुख उठाएंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति होगी। आप समाज में मान प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। राज्यकार्य अर्थात् सरकारी मामलों की आपको विधिवत जानकारी होगी।

आप एक धनवान और ईमानदार व्यक्ति हैं। आप एक दीर्घायु व्यक्ति हैं। आप गुणवान और संतान का सुख पाने वाले व्यक्ति हैं। आप नौकर चाकर से युक्त अपने बच्चों के साथ प्रसन्नता पूर्वक रहेंगे। आपके पुत्री संतान पुत्रों की अपेक्षा अधिक हो सकती हैं। कभीकभी कामों को आवश्यकता से अधिक विस्तार देने के कारण आप उन्हें पूरा नहीं कर पाएंगे।

यदि आप राजनीति में किस्मत आजमाना चाहते हैं तो आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपको सरकार के कामों करने का अवसर भी मिल सकता है। अथवा सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो सकती है। आप किसी भी समाज में आसानी से घुल मिल जाने वाले व्यक्ति हैं। व्यापार के माध्यम से भी आपको खूब लाभ होगा।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल वृश्चिक राशि में स्थित है, जो कि मंगल की स्व राशि है। मंगल सातवें, दूसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में दूसरे घर में स्थित है। मंगलदृष्टि पांचवें, आठवें, नौवें घरावर आहे राहू की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

मंगल ग्रह की यह स्थिति आपकी बहुत कड़ी मेहनत करा के सफलता देने की संकेतक है। आपकी शिक्षा में कुछ व्यवधान आ सकते हैं। आपके भीतर कभीकभी जरत से ज्यादा चिड़चिड़पन देखने को मिलेगा अथवा आपकी वाणी कुछ कड़वाहट लिए हुए हो सकती है। आपको दुष्ट लोगों के साथ रहने में भी परेशानी नहीं होगी। मंगल की यह स्थिति जीवन साथी की आयु में भी प्रभावी होती है।

आपको आंखों की तकलीफों के साथसाथ पेट में कब्ज की तकलीफ भी रह सकती है। आप अपने जन्म स्थान से दूर रह सकते हैं। पिता और बच्चों का स्वभाव गुस्सैल हो सकता है। आपके बच्चे काफी ऊर्जावान और बड़े पदों को प्राप्त करने वाले हो सकते हैं। लेकिन प्रथम पुत्र की पैदाइस के समय कुछ परेशानी हो सकती है। मंगल की यह स्थिति कभीकभी पारिवारिक असंतोष भी देती है।

मंगल यह की यह स्थिति कभीकभी धन को बुरी आदतो और गलत माध्यमों के माध्यम से खर्च करने का संकेत भी करती है। आपके भाई या बहन को किसी हिंसक जानवर से खतरा हो सकता है। उन्हें कभीकभार शत्रुओं से बड़ी परेशानी भी हो सकती है। आपकी माता जी अपने किसी जानकार के गलत परामर्श के कारण कोई जोखिम भरा निर्णय ले सकती हैं।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध कुंभ राशि में स्थित है, जो कि बुध की सम राशि है। बुध नौवें, बारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पांचवें घर में स्थित है। बुधदृष्टि ग्यारहवें घरावर आहे चन्द्र,मंगल,शनि की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

यहां स्थित बुध के कारण आपका स्वप सुंदर होना चाहिए। आपका स्वभाव पवित्र है। आप प्रसन्नचित्त, कुशशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी व्यक्ति हैं। आपके सुंदर व्यवहार के कारण लोग आपके वशीभूत हो जाएंगे। आप सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतिषी व्यक्ति हैं। आप उद्यमी और अपने काम में दक्ष हैं। आपको माता और स्त्री का सुख मिलेगा। आप राज दरबार में भी सम्मानित होंगे।

आपको संतान और विशेषकर पुत्र सुख मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के मंत्रों को जानते हैं। पंचम भाव में बुध होने कारण आपको आर्थिक तंगी से भी नहीं जूझना पड़ेगा। आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करते रहेंगे। आपकी रुचि सट्टे और जुएं में भी हो सकती है। आप यशस्वी और लोक समुदाय में प्रभावशाली रहेंगे। आपकी रुचि साहित्य में होगी और आप लेखक, कवि, नाटक रचयिता या उपन्यासकार हो सकते हैं।

यहां स्थित बुध कभीकभी दंभी भी बनाता है जिससे बचाव करना जरी होगा। कभीकभी आपके मन में लोभ की भावना भी पनप सकती है, जिससे बचाव करना जरी होगा। यद्यपि आपको संतान सुख मिलेगा लेकिन उसमें कुछ बाधाएं आ सकती हैं या कन्याओं की संख्या अधिक हो सकती है। इन सबके बावजूद आप अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करेंगे।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

गुरु विचार

आपकी कुण्डली में गुरु मेष राशि में स्थित है, जो कि गुरु की मित्र राशि है। गुरु तीसरे, छठे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। गुरुदृष्टि ग्यारहवें, पहले, तीसरे घरावर आहे

आप शारीरिक प से सुंदर और और आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक हैं। लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होते हैं अर्थात आपके आकर्षण के कारण लोग आपसे मिलकर आपके वशीभूत हो जाते हैं। आपकी वाणी आकर्षक और प्रभावशाली होगी। आप कुशाग्र बुद्धि और विद्या सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप ज्योतिष काव्य साहित्य, कला प्रेमी और शशास्त्र परिशीलन में आसक्त रहने वाले व्यक्ति हैं।

आप प्रतापी यशस्वी और प्रसिद्ध होंगे। लेकिन यहां स्थित बृहस्पति कभीकभी विपरीत लिंगी के प्रति अधिक आशक्ति देता है परंतु उनके प्रति लम्बे समय तक समर्पित रहना आपको पसंद नहीं होगा। फिर भी आपका जीवन साथी कुलीन और धनवान होना चाहिए। विवाह के कारण आपका भाग्योदय होगा और आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। आपका जीवन साथी गुणों से युक्त होगा।

सप्तम भाव का बृहस्पति कामुकता अधिक देता है। यहां स्थित कभीकभी अभिमानी भी बनाता है। अतः इन पर नियंत्रण भी आवश्यक होगा। आप शीघ्र ही बड़ी उन्नति और बड़ा पद प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकता है। आप न्याय के काम से भी धनार्जन कर सकते हैं।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र मीन राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की उच्च राशि है। शुक्र आठवें, पहले घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है। शुक्रदृष्टि बारहवें घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

इस भाव में स्थित शुक्र के कुछ अच्छे फल कहे गए हैं लेकिन कई अशुभ फल बताए गए हैं। शुक्र की इस भाव में स्थिति आपके कुल की श्रेष्ठता का द्योतक हो सकती है। आप सुशिक्षित और विवेकवान हो सकते हैं। लेकिन यहां स्थित शुक्र आपको डरपोक बना सकता है अथवा आपको स्त्रियों से अप्रियता भी मिल सकती है। गुरुजनों से भी आपका विरोध रह सकता है।

आपको शत्रुओं से पीडा भी मिल सकती है। हांलाकि आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। आपको भाईबहनों और मामा से सुख मिलेगा। आपके मामा के कन्या संतान अधिक हो सकती हैं। आपके अच्छे मित्रों की संख्या कम होगी जबकि खराब आदतों वाले मित्र अधिक संख्या में होंगे। आपकी प्रथम संतान पुत्र के प में हो सकती है। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्रपौत्रों से युक्त होंगे।

स्त्री पक्ष से आपको कम सुख मिलेगा अथवा कुछ गुप्त परेशानियां रह सकती हैं। हांलाकि विवाह के बाद यदि आपका आहार विहार नियमित और मर्यादित रहेगा तो समस्याएं नहीं होंगी। आपके खर्चे आमदनी से अधिक हो सकते हैं। हो सकता है कि आप उचित स्थान पर खर्च न करके अनुचित जगह पर खर्च करें। हो सकता है कि स्वतंत्र व्यवसाय से भी आपको बहुत लाभ न मिल पाए।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि धनु राशि में स्थित है, जो कि शनि की सम राशि है। शनि चौथे, पांचवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में तीसरे घर में स्थित है। शनिदृष्टि पांचवें, नौवें, बारहवें घरावर आहे गुरु की पूर्ण दृष्टि शनि पर है।

यहां स्थित शनि आपको न्यायी, प्रमाणिक और चतुर बनाता है। आप गहरी बुद्धिवाले और अच्छी सलाह देने वाले व्यक्ति हैं। आपकी रुचि ज्योतिष जैसे गूढ़ शास्त्रों में हो सकती है। आप निरोगी, योगी और मितभाषी व्यक्ति हैं। आप विवेकवान सभा में चतुर, शीघ्र कार्य सम्पन्न करने वाले, बलवान और प्रतापी व्यक्ति होंगे।

आप शत्रुओं को परास्त करने वाले भाग्यवान और चंचल स्वभाव के हो सकते हैं। आप बिना भेद भाव के सभी की मदद करते हैं और यथा सम्भव लोगों का पालन पोषण भी करते हैं। आप बड़े स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आप उत्तम वाहनों से युक्त, ग्राम या शहर के प्रधान और राज्यमान व्यक्ति बन सकते हैं।

आपके मित्रों की संख्या खूब होगी और आप विपरीत लिंगियों में भी लोकप्रिय रहेंगे। आप अच्छा धनार्जन करेंगे। यहां स्थित शनि आपको कुछ विपरीत परिणाम भी दे सकता है। आप आलसी या दुखी हो सकते हैं। मन में अशांति रह सकती है। शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। बरसात या ठंड के मौसम में शारीरिक अस्वस्थता रह सकती है।

राहु विचार

आपकी कुण्डली में राहु मीन राशि में स्थित है। राहु छठे घर में स्थित है। राहुदृष्टि दसवें, बारहवें, दूसरे घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि राहु पर है।

यहां स्थित राहु अनिष्ट का निवारण करता है अर्थात् आपके जीवन के अरिष्ट दूर करता है। आपके जीवन के कष्ट नष्ट होते हैं। आप परक्रमी और शक्ति सम्पन्न होंगे। आप उदारहृदय और धैर्यवान हैं। आप स्थिरचित्त और बुद्धिमान हैं। आप साहसिक और बड़ेबड़े कामों को अंजाम देने वाले हैं। आप शारीरिक प से निरोगी होंगे और दीर्घायु होंगे।

आप शत्रुओं का नाश करने वाले और शत्रुओं को पराजित करने वाले हैं। आप प्रसिद्ध और राज जैसी मान्यता को प्राप्त कर सकते हैं। आप पर सरकार की कृपा रहेगी। दूसरे धर्म के लोगों के द्वारा आपको लाभ मिलेगा और धन प्राप्ति भी होगी। म्लेच्छ जाति के राजा से आपको धन लाभ होगा। आप एक अमीर व्यक्ति हो सकते हैं।

आप वस्त्र, वाहन और आभूषणों से युक्त होंगे। आप भाग्यशाली हैं और आपके पास खूब धन होगा। आपका जीवन साथी अच्छा होगा। लेकिन राहु के दुष्प्रभाव स्वप आपकी संगति खराब रह सकती है। आपकी नौकरी में अस्थिरता रह सकती है। ऊपरी बाधाएं या कोई रहस्यमयी बीमारी हो सकती है। मामा, मौसी या चाचा पक्ष से कम सुख रहेगा।

।। आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ।।

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु कन्या राशि में स्थित है। केतु बारहवें घर में स्थित है। केतुदृष्टि चौथे, छठे, आठवें घरावर आहे शुक्र,शनि,राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

यहां स्थित केतू शुभफलों के प में आपको राजा के समान सुख और ऐश्वर्य दे सकता है। आपकी आंखें सुंदर होंगी। आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप शास्त्रों को जानने वाले कवित्त सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप शत्रुओं को पराजित कर शत्रुओं का नाश करने वाले व्यक्ति हैं। वादविवाद में आप हमेशा विजयी रहते हैं।

धार्मिक और शुभ कर्मों के आप धन खर्च करते हैं। अर्थात् आपका धन अच्छे कार्यों में खर्च होता है। लेकिन यहां स्थिति केतू कुछ अशुभ परिणाम भी देता है जिसके कारण आप चंचल स्वभाव के भी हो सकते हैं। आप किसी पर विश्वास नहीं करेंगे। लोगों को भ्रमित करते रहेंगे। आप कुछ हद तक डरपोक भी हो सकते हैं।

आपका मन अशांत रह सकता है। आपकी पुरानी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। आपको आखों से सम्बंधित कोई तकलीफ हो सकती है। पेट के आसपास कोई रोग हो सकता है या कष्ट रह सकता है। गुदा में या गुह्यभाग में रोग हो सकता है। पांवों से सम्बंधित कोई तकलीफ रह सकती है। मामा से कम सुख मिलेगा। आपको अपने जीवनकाल में बहुत सी यात्राएं करनी पड़ेंगी।

॥ शोडषवर्ग तालिका ॥

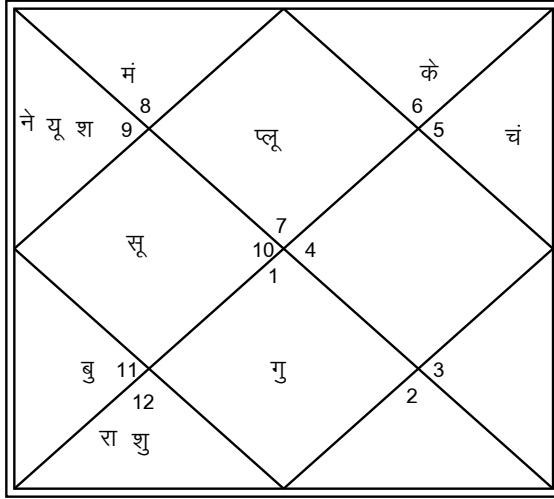
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	7	10	5	8	11	1	12	9	12	6	9	9	7
2	होरा	5	5	4	5	5	5	4	5	4	4	5	4	4
3	द्रेष्काण	7	6	1	4	11	1	12	9	12	6	9	1	11
4	चतुर्थांश	7	4	2	5	11	1	12	9	12	6	9	3	1
5	सप्तमांश	7	9	10	7	11	1	6	10	6	0	10	0	11
6	नवमांश	8	4	7	11	7	1	4	2	4	10	2	5	12
7	दशमांश	8	1	12	12	12	1	8	10	8	2	10	2	1
8	द्वादशांश	8	6	2	6	12	1	12	11	12	6	11	3	2
9	षोडशांश	3	12	5	6	6	1	9	11	9	9	12	5	11
10	विंशांश	4	3	12	1	11	1	6	8	6	6	8	3	1
11	चतुर्विंशांश	8	9	11	12	7	5	5	9	5	5	9	5	8
12	सप्तविंशांश	11	12	9	8	9	1	11	6	11	5	6	2	11
13	त्रिंशांश	1	10	3	8	1	1	2	11	2	2	11	9	3
14	खवेदांश	7	12	8	4	5	1	9	8	9	9	8	9	2
15	अक्षवेदांश	8	10	3	6	9	1	11	5	11	11	5	7	5
16	षष्ट्यंश	4	6	3	10	5	1	3	8	3	9	8	3	8

शोडषवर्ग भाव तालिका

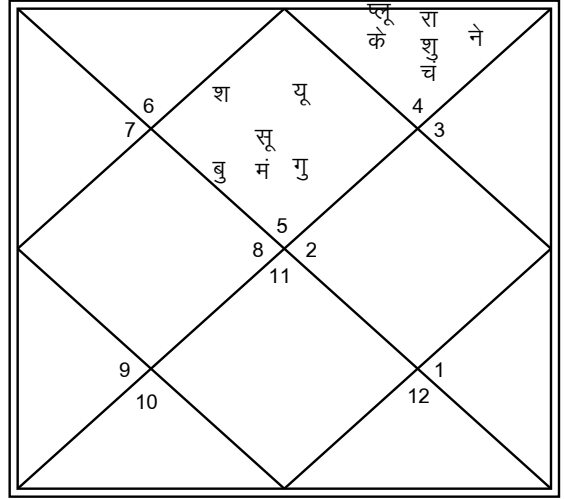
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	1	4	11	2	5	7	6	3	6	12	3	3	1
2	होरा	1	1	12	1	1	1	12	1	12	12	1	12	12
3	द्रेष्काण	1	12	7	10	5	7	6	3	6	12	3	7	5
4	चतुर्थांश	1	10	8	11	5	7	6	3	6	12	3	9	7
5	सप्तमांश	1	3	4	1	5	7	12	4	12	6	4	6	5
6	नवमांश	1	9	12	4	12	6	9	7	9	3	7	10	5
7	दशमांश	1	6	5	5	5	6	1	3	1	7	3	7	6
8	द्वादशांश	1	11	7	11	5	6	5	4	5	11	4	8	7
9	षोडशांश	1	10	3	4	4	11	7	9	7	7	10	3	9
10	विंशांश	1	12	9	10	8	10	3	5	3	3	5	12	10
11	चतुर्विंशांश	1	2	4	5	12	10	10	2	10	10	2	10	1
12	सप्तविंशांश	1	2	11	10	11	3	1	8	1	7	8	4	1
13	त्रिंशांश	1	10	3	8	1	1	2	11	2	2	11	9	3
14	खवेदांश	1	6	2	10	11	7	3	2	3	3	2	3	8
15	अक्षवेदांश	1	3	8	11	2	6	4	10	4	4	10	12	10
16	षष्ट्यंश	1	3	12	7	2	10	12	5	12	6	5	12	5

॥ शोडशवर्ग कुण्डलियाँ ॥

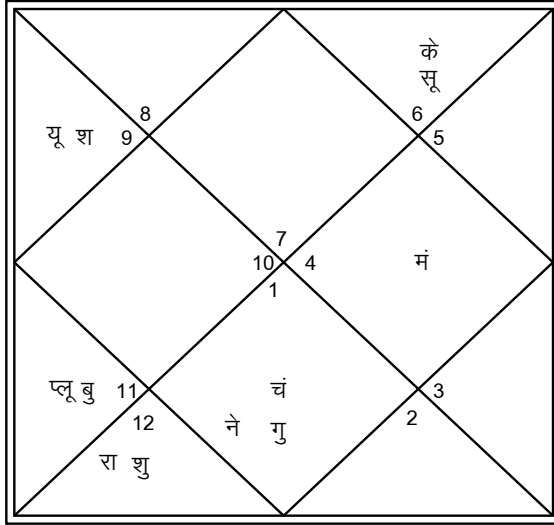
लग्न चक्र



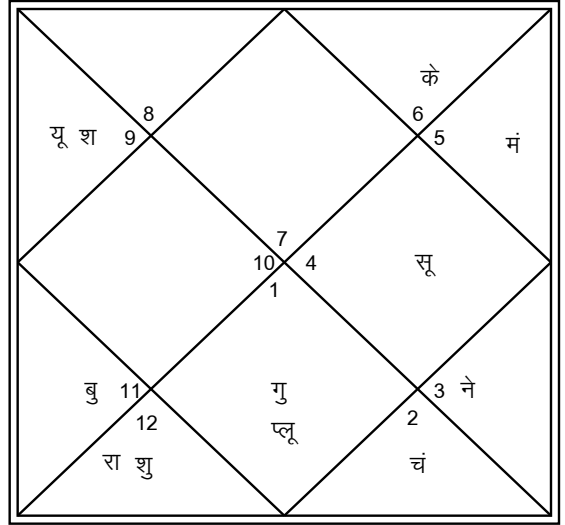
होरा-धन-सम्पत्ति



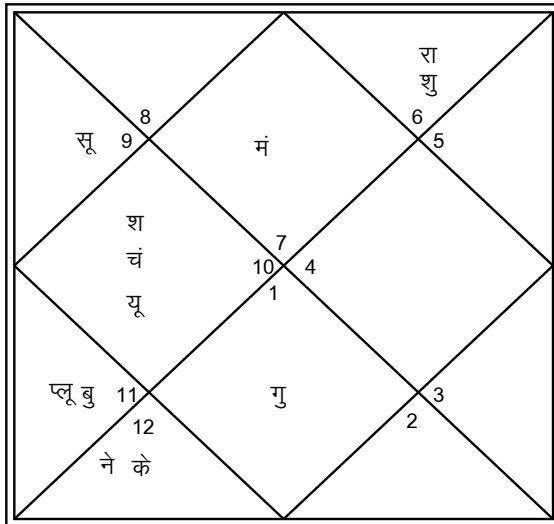
द्रेष्काण-भाई-बहन



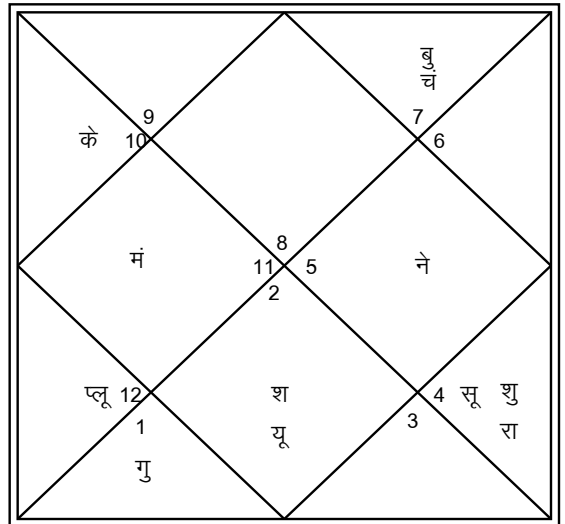
चतुर्थांश-भाग्य



सप्तमांश-बच्चे

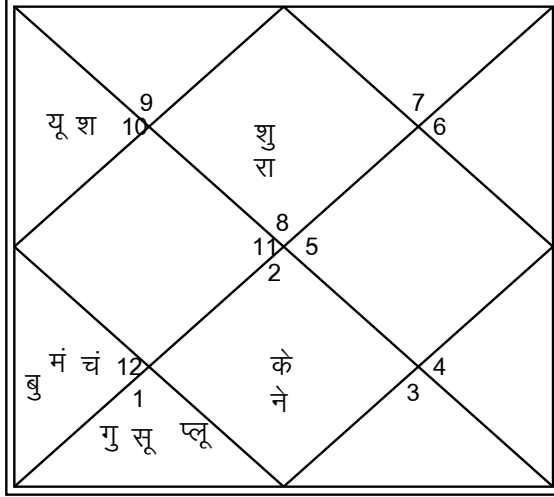


नवमांश-पति-पत्नी

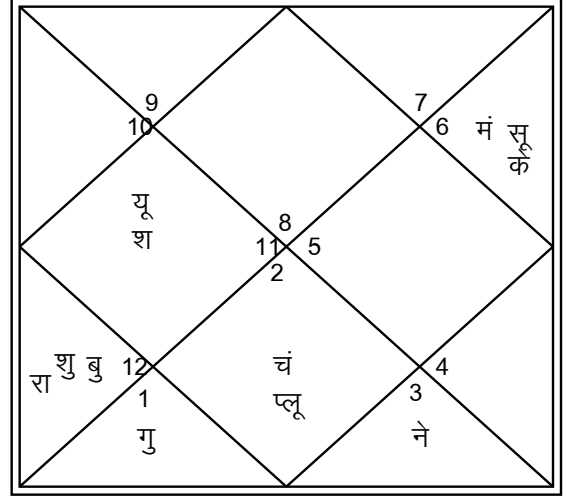


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

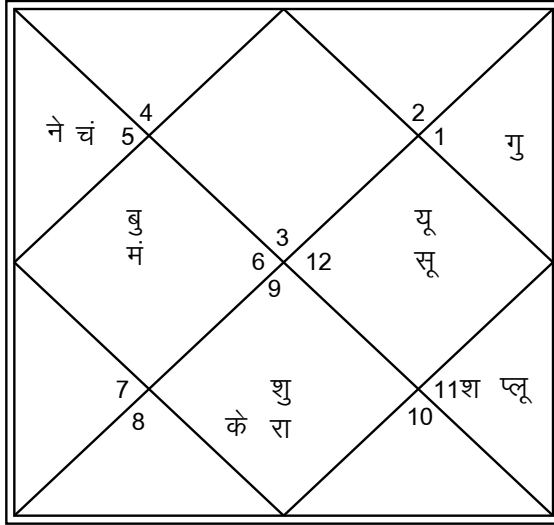
दशमांश-व्यवसाय



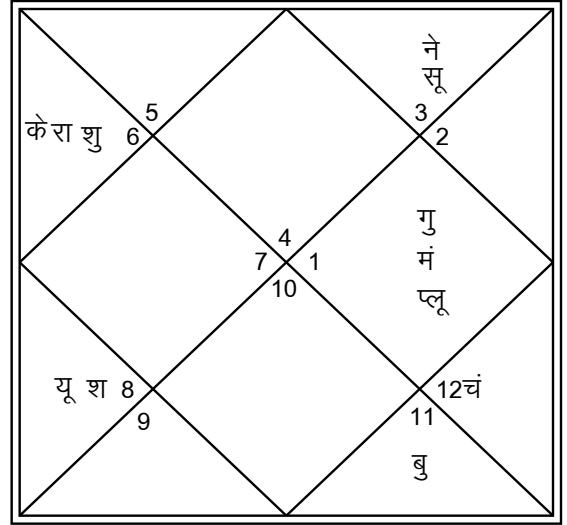
द्वादशांश-माता-पिता



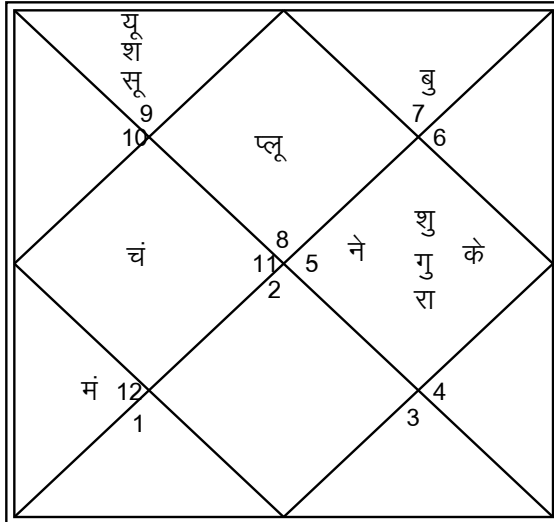
षोडशांश-वाहन



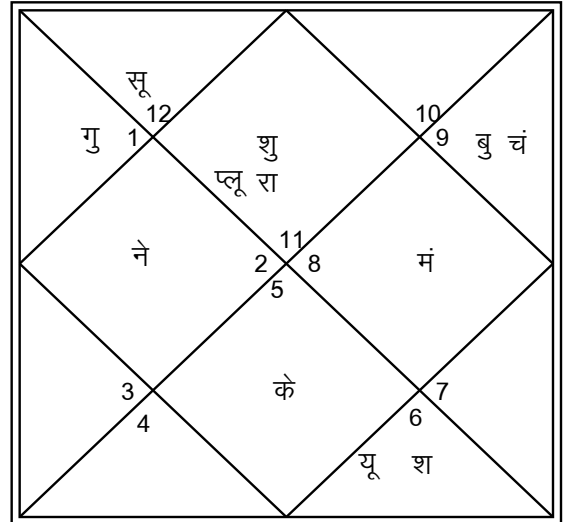
विंशांश-धार्मिक रुचि



सप्तविंशांश-बल

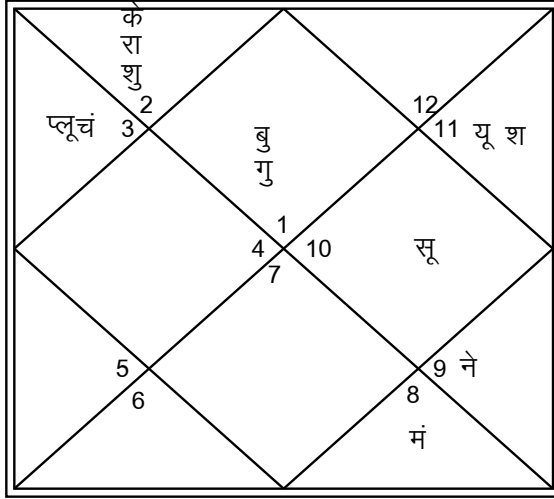


चतुर्विंशांश-शिक्षा

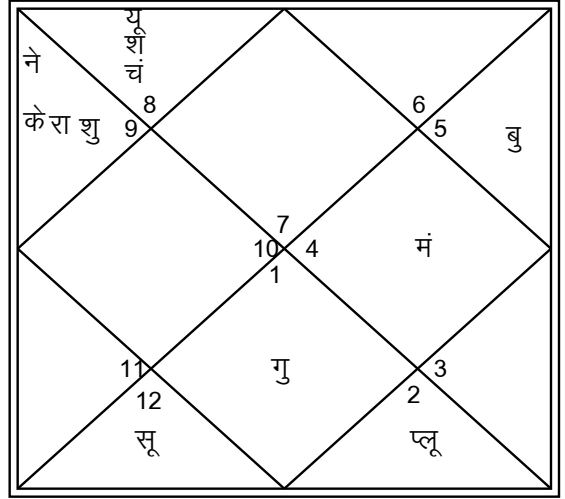


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

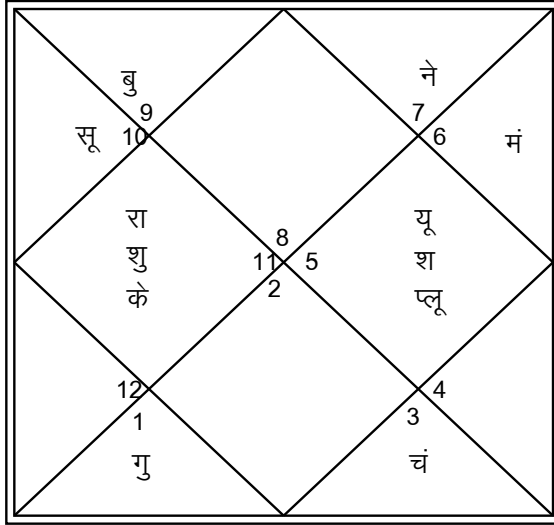
त्रिंशंश-दुर्भाग्य



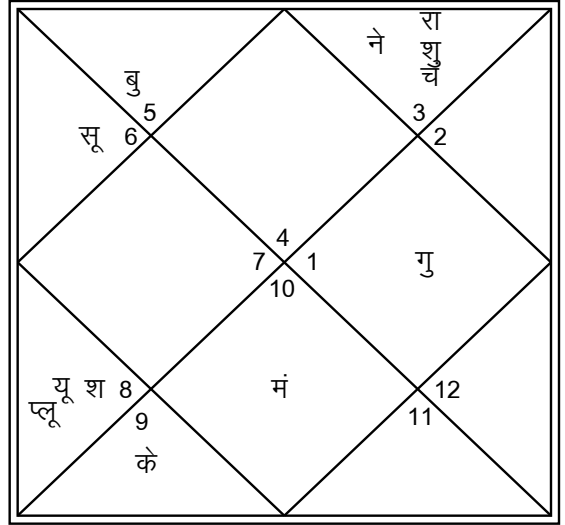
खवेदांश-शुभ फल



अक्षवेदांश-सामान्य जीवन



षष्ट्यंश-सामान्य जीवन



 **एस्ट्रोसेज
शॉप**

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी

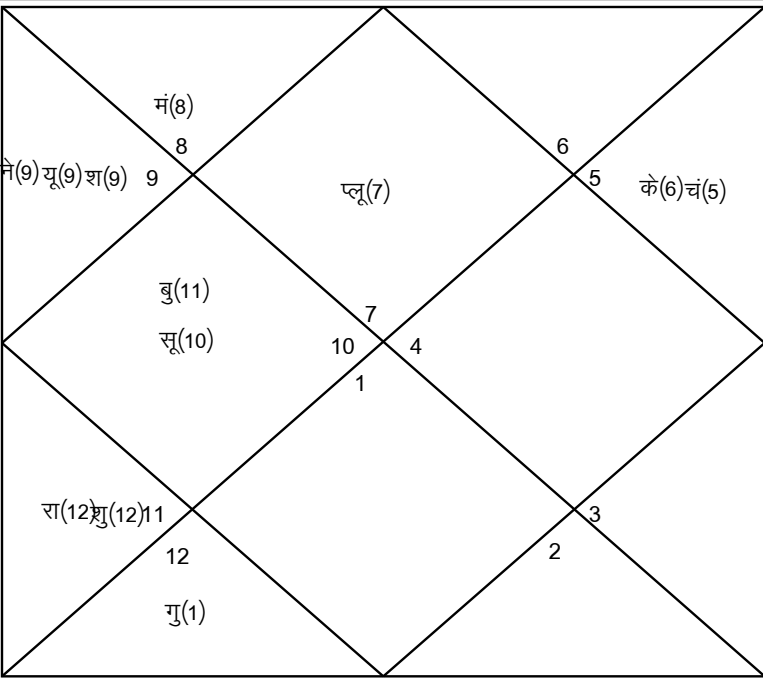


परामर्श



॥ केपी पद्धति ॥

नाम	Niresh Sir	सूर्योदय	06. 45. 20	दशा भोग्य	VEN 5 Y 0 M 13 D
लिंग	Male	रेखांश	85.58.E	तिथि	तृतीया
दिनांक	5.2.1988	अक्षांश	27.15.N	योग	अतिगण्ड
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Sindhuli	लग्न	तुला
समय	23.10.6	अयनांश	023-36-02	राशि	सिंह
साम्पातिक काल	08.09.17	अयनांश नाम	के.पी. नया	नक्षत्र	पू०फाल्गुनी-4
				दशा स्वामी	शुक्र
				सूर्यास्त	17. 44. 51
				करण	विष्टि
				लग्न स्वामी	शुक्र
				राशि स्वामी	सूर्य
				नक्षत्र स्वामी	शुक्र



शुक्र -20 वर्ष 5/ 2/88 से 30/12/92	
शुक्र	00/00/00
सूर्य	00/00/00
चंद्र	00/00/00
मंगल	00/00/00
राहु	00/00/00
गुरु	00/00/00
शनि	30/12/88
बुध	30/10/91
केतु	30/12/92

सूर्य -6 वर्ष 30/12/92 से 30/12/98	
सूर्य	18/4/93
चंद्र	18/10/93
मंगल	24/2/94
राहु	18/1/95
गुरु	6/11/95
शनि	18/10/96
बुध	24/8/97
केतु	30/12/97
शुक्र	30/12/98

चंद्र -10 वर्ष 30/12/98 से 30/12/08	
चंद्र	30/10/99
मंगल	30/5/00
राहु	30/11/01
गुरु	30/3/03
शनि	30/10/04
बुध	30/3/06
केतु	30/10/06
शुक्र	30/6/08
सूर्य	30/12/08

मंगल -7 वर्ष 30/12/08 से 30/12/15	
मंगल	27/5/09
राहु	15/6/10
गुरु	21/5/11
शनि	30/6/12
बुध	27/6/13
केतु	24/11/13
शुक्र	24/1/15
सूर्य	30/5/15
चंद्र	30/12/15

राहु -18 वर्ष 30/12/15 से 30/12/33	
राहु	12/9/18
गुरु	6/2/21
शनि	12/12/23
बुध	30/6/26
केतु	18/7/27
शुक्र	18/7/30
सूर्य	12/6/31
चंद्र	12/12/32
मंगल	30/12/33

गुरु -16 वर्ष 30/12/33 से 30/12/49	
गुरु	18/2/36
शनि	30/8/38
बुध	6/12/40
केतु	12/11/41
शुक्र	12/7/44
सूर्य	30/4/45
चंद्र	30/8/46
मंगल	6/8/47
राहु	30/12/49

शनि -19 वर्ष 30/12/49 से 30/12/68	
शनि	3/1/53
बुध	12/9/55
केतु	21/10/56
शुक्र	21/12/59
सूर्य	3/12/60
चंद्र	3/7/62
मंगल	12/8/63
राहु	18/6/66
गुरु	30/12/68

बुध -17 वर्ष 30/12/68 से 30/12/85	
बुध	27/5/71
केतु	24/5/72
शुक्र	24/3/75
सूर्य	30/1/76
चंद्र	30/6/77
मंगल	27/6/78
राहु	15/1/81
गुरु	21/4/83
शनि	30/12/85

केतु -7 वर्ष 30/12/85 से 30/12/92	
केतु	27/5/86
शुक्र	27/7/87
सूर्य	3/12/87
चंद्र	3/7/88
मंगल	30/11/88
राहु	18/12/89
गुरु	24/11/90
शनि	3/1/92
बुध	30/12/92

शासक ग्रह			
ग्रह	राशि स्वामी	नक्षत्र	सब स्वामी
लग्न	शुक्र	मंगल	सूर्य
चन्द्र	सूर्य	शुक्र	शनि
दिन स्वामी		शुक्र	

भाव स्थिति					
भाव	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
1	185.00.45	शुक्र	मंगल	सूर्य	मंगल
2	213.56.12	मंगल	शनि	शनि	बुध
3	244.35.15	गुरु	केतु	चंद्र	शुक्र
4	276.32.10	शनि	सूर्य	बुध	गुरु
5	308.36.32	शनि	राहु	राहु	मंगल
6	338.36.09	गुरु	शनि	शुक्र	चंद्र
7	005.00.45	मंगल	केतु	मंगल	गुरु
8	033.56.12	शुक्र	सूर्य	शनि	शुक्र
9	064.35.15	बुध	मंगल	शुक्र	बुध
10	096.32.10	चंद्र	शनि	बुध	राहु
11	128.36.32	सूर्य	केतु	गुरु	शुक्र
12	158.36.09	बुध	सूर्य	शुक्र	राहु

ग्रह स्थिति					
ग्रह	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
सूर्य	292.32.20	शनि	चंद्र	शुक्र	केतु
चन्द्र	143.23.56	सूर्य	शुक्र	शनि	मंगल
मंगल	235.11.12	मंगल	बुध	राहु	बुध
बुध	303.22.06	शनि	मंगल	शुक्र	मंगल
गुरु	000.31.58	मंगल	केतु	केतु	गुरु
शुक्र	331.51.41	गुरु	गुरु	राहु	गुरु
शनि	245.40.34	गुरु	केतु	राहु	राहु
राहु	331.40.16	गुरु	गुरु	राहु	गुरु
केतु	151.40.16	बुध	सूर्य	गुरु	शनि
अरुण	246.02.56	गुरु	केतु	राहु	गुरु
वरुण	255.24.44	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध
यम	198.55.45	शुक्र	राहु	चंद्र	केतु

घर के कारक ग्रह	
भाव	ग्रह
1	चं शु
2	मं बु
3	गु शु श रा
4	सू मं बु श के
5	चं शु श रा
6	गु शु रा
7	मं बु
8	चं शु
9	मं बु
10	सू चं
11	सू चं गु श के
12	मं बु

ग्रह कारकत्व	
ग्रह	भाव
सूर्य	4 10 11
चन्द्र	1 5 8 10 11
मंगल	2 4 7 9 12
बुध	2 4 7 9 12
गुरु	3 6 11
शुक्र	1 3 5 6 8
शनि	3 4 5 11
राहु	3 5 6
केतु	4 11

दशा भोग्य: VEN 5 Y 0 M 13 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

शुक्र — शनि 5 / 2 / 88 से 30 / 12 / 88		शुक्र — बुध 30 / 12 / 88 से 30 / 10 / 91		शुक्र — केतु 30 / 10 / 91 से 30 / 12 / 92		सूर्य — सूर्य 30 / 12 / 92 से 18 / 4 / 93		सूर्य — चंद्र 18 / 4 / 93 से 18 / 10 / 93	
शनि	00 / 00 / 00	बुध	25 / 5 / 89	केतु	25 / 11 / 91	सूर्य	5 / 1 / 93	चंद्र	3 / 5 / 93
बुध	00 / 00 / 00	केतु	24 / 7 / 89	शुक्र	5 / 2 / 92	चंद्र	14 / 1 / 93	मंगल	14 / 5 / 93
केतु	00 / 00 / 00	शुक्र	14 / 1 / 90	सूर्य	26 / 2 / 92	मंगल	21 / 1 / 93	राहु	11 / 6 / 93
शुक्र	00 / 00 / 00	सूर्य	5 / 3 / 90	चंद्र	1 / 4 / 92	राहु	7 / 2 / 93	गुरु	5 / 7 / 93
सूर्य	00 / 00 / 00	चंद्र	30 / 5 / 90	मंगल	25 / 4 / 92	गुरु	21 / 2 / 93	शनि	3 / 8 / 93
चंद्र	00 / 00 / 00	मंगल	30 / 7 / 90	राहु	28 / 6 / 92	शनि	8 / 3 / 93	बुध	29 / 8 / 93
मंगल	7 / 2 / 88	राहु	3 / 1 / 91	गुरु	24 / 8 / 92	बुध	24 / 3 / 93	केतु	9 / 9 / 93
राहु	28 / 7 / 88	गुरु	19 / 5 / 91	शनि	1 / 11 / 92	केतु	30 / 3 / 93	शुक्र	9 / 10 / 93
गुरु	30 / 12 / 88	शनि	30 / 10 / 91	बुध	30 / 12 / 92	शुक्र	18 / 4 / 93	सूर्य	18 / 10 / 93

सूर्य — मंगल 18 / 10 / 93 से 24 / 2 / 94		सूर्य — राहु 24 / 2 / 94 से 18 / 1 / 95		सूर्य — गुरु 18 / 1 / 95 से 6 / 11 / 95		सूर्य — शनि 6 / 11 / 95 से 18 / 10 / 96		सूर्य — बुध 18 / 10 / 96 से 24 / 8 / 97	
मंगल	25 / 10 / 93	राहु	13 / 4 / 94	गुरु	26 / 2 / 95	शनि	30 / 12 / 95	बुध	1 / 12 / 96
राहु	14 / 11 / 93	गुरु	26 / 5 / 94	शनि	12 / 4 / 95	बुध	19 / 2 / 96	केतु	19 / 12 / 96
गुरु	1 / 12 / 93	शनि	17 / 7 / 94	बुध	23 / 5 / 95	केतु	9 / 3 / 96	शुक्र	10 / 2 / 97
शनि	21 / 12 / 93	बुध	3 / 9 / 94	केतु	10 / 6 / 95	शुक्र	6 / 5 / 96	सूर्य	26 / 2 / 97
बुध	9 / 1 / 94	केतु	22 / 9 / 94	शुक्र	28 / 7 / 95	सूर्य	23 / 5 / 96	चंद्र	21 / 3 / 97
केतु	16 / 1 / 94	शुक्र	16 / 11 / 94	सूर्य	12 / 8 / 95	चंद्र	21 / 6 / 96	मंगल	9 / 4 / 97
शुक्र	7 / 2 / 94	सूर्य	2 / 12 / 94	चंद्र	6 / 9 / 95	मंगल	11 / 7 / 96	राहु	25 / 5 / 97
सूर्य	14 / 2 / 94	चंद्र	29 / 12 / 94	मंगल	23 / 9 / 95	राहु	2 / 9 / 96	गुरु	6 / 7 / 97
चंद्र	24 / 2 / 94	मंगल	18 / 1 / 95	राहु	6 / 11 / 95	गुरु	18 / 10 / 96	शनि	24 / 8 / 97

सूर्य — केतु 24 / 8 / 97 से 30 / 12 / 97		सूर्य — शुक्र 30 / 12 / 97 से 30 / 12 / 98		चंद्र — चंद्र 30 / 12 / 98 से 30 / 10 / 99		चंद्र — मंगल 30 / 10 / 99 से 30 / 5 / 00		चंद्र — राहु 30 / 5 / 00 से 30 / 11 / 01	
केतु	1 / 9 / 97	शुक्र	2 / 3 / 98	चंद्र	25 / 1 / 99	मंगल	12 / 11 / 99	राहु	21 / 8 / 00
शुक्र	22 / 9 / 97	सूर्य	18 / 3 / 98	मंगल	13 / 2 / 99	राहु	14 / 12 / 99	गुरु	3 / 11 / 00
सूर्य	29 / 9 / 97	चंद्र	18 / 4 / 98	राहु	28 / 3 / 99	गुरु	12 / 1 / 00	शनि	29 / 1 / 01
चंद्र	9 / 10 / 97	मंगल	9 / 5 / 98	गुरु	8 / 5 / 99	शनि	15 / 2 / 00	बुध	15 / 4 / 01
मंगल	17 / 10 / 97	राहु	3 / 7 / 98	शनि	25 / 6 / 99	बुध	15 / 3 / 00	केतु	17 / 5 / 01
राहु	5 / 11 / 97	गुरु	21 / 8 / 98	बुध	8 / 8 / 99	केतु	27 / 3 / 00	शुक्र	17 / 8 / 01
गुरु	22 / 11 / 97	शनि	18 / 10 / 98	केतु	25 / 8 / 99	शुक्र	2 / 5 / 00	सूर्य	14 / 9 / 01
शनि	12 / 12 / 97	बुध	9 / 12 / 98	शुक्र	15 / 10 / 99	सूर्य	13 / 5 / 00	चंद्र	29 / 10 / 01
बुध	30 / 12 / 97	केतु	30 / 12 / 98	सूर्य	30 / 10 / 99	चंद्र	30 / 5 / 00	मंगल	30 / 11 / 01

दशा भोग्य: VEN 5 Y 0 M 13 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

चंद्र — गुरु 30/11/01 से 30/ 3/03		चंद्र — शनि 30/ 3/03 से 30/10/04		चंद्र — बुध 30/10/04 से 30/ 3/06		चंद्र — केतु 30/ 3/06 से 30/10/06		चंद्र — शुक्र 30/10/06 से 30/ 6/08	
गुरु	4/2/02	शनि	30/6/03	बुध	12/1/05	केतु	12/4/06	शुक्र	10/2/07
शनि	20/4/02	बुध	21/9/03	केतु	12/2/05	शुक्र	17/5/06	सूर्य	10/3/07
बुध	28/6/02	केतु	24/10/03	शुक्र	7/5/05	सूर्य	28/5/06	चंद्र	30/4/07
केतु	26/7/02	शुक्र	29/1/04	सूर्य	3/6/05	चंद्र	15/6/06	मंगल	5/6/07
शुक्र	16/10/02	सूर्य	28/2/04	चंद्र	15/7/05	मंगल	28/6/06	राहु	5/9/07
सूर्य	10/11/02	चंद्र	15/4/04	मंगल	15/8/05	राहु	29/7/06	गुरु	25/11/07
चंद्र	20/12/02	मंगल	19/5/04	राहु	1/11/05	गुरु	27/8/06	शनि	2/3/08
मंगल	18/1/03	राहु	14/8/04	गुरु	9/1/06	शनि	30/9/06	बुध	25/5/08
राहु	30/3/03	गुरु	30/10/04	शनि	30/3/06	बुध	30/10/06	केतु	30/6/08

चंद्र — सूर्य 30/ 6/08 से 30/12/08		मंगल — मंगल 30/12/08 से 27/ 5/09		मंगल — राहु 27/ 5/09 से 15/ 6/10		मंगल — गुरु 15/ 6/10 से 21/ 5/11		मंगल — शनि 21/ 5/11 से 30/ 6/12	
सूर्य	9/7/08	मंगल	9/1/09	राहु	24/7/09	गुरु	30/7/10	शनि	24/7/11
चंद्र	24/7/08	राहु	1/2/09	गुरु	14/9/09	शनि	23/9/10	बुध	21/9/11
मंगल	5/8/08	गुरु	20/2/09	शनि	14/11/09	बुध	11/11/10	केतु	14/10/11
राहु	2/9/08	शनि	14/3/09	बुध	8/1/10	केतु	30/11/10	शुक्र	20/12/11
गुरु	26/9/08	बुध	4/4/09	केतु	30/1/10	शुक्र	26/1/11	सूर्य	10/1/12
शनि	24/10/08	केतु	13/4/09	शुक्र	3/4/10	सूर्य	13/2/11	चंद्र	14/2/12
बुध	20/11/08	शुक्र	7/5/09	सूर्य	21/4/10	चंद्र	11/3/11	मंगल	7/3/12
केतु	30/11/08	सूर्य	15/5/09	चंद्र	23/5/10	मंगल	1/4/11	राहु	7/5/12
शुक्र	30/12/08	चंद्र	27/5/09	मंगल	15/6/10	राहु	21/5/11	गुरु	30/6/12

मंगल — बुध 30/ 6/12 से 27/ 6/13		मंगल — केतु 27/ 6/13 से 24/11/13		मंगल — शुक्र 24/11/13 से 24/ 1/15		मंगल — सूर्य 24/ 1/15 से 30/ 5/15		मंगल — चंद्र 30/ 5/15 से 30/12/15	
बुध	21/8/12	केतु	6/7/13	शुक्र	4/2/14	सूर्य	30/1/15	चंद्र	18/6/15
केतु	11/9/12	शुक्र	30/7/13	सूर्य	25/2/14	चंद्र	11/2/15	मंगल	30/6/15
शुक्र	11/11/12	सूर्य	7/8/13	चंद्र	30/3/14	मंगल	18/2/15	राहु	1/8/15
सूर्य	29/11/12	चंद्र	20/8/13	मंगल	25/4/14	राहु	7/3/15	गुरु	29/8/15
चंद्र	29/12/12	मंगल	28/8/13	राहु	28/6/14	गुरु	24/3/15	शनि	3/10/15
मंगल	19/1/13	राहु	20/9/13	गुरु	24/8/14	शनि	14/4/15	बुध	2/11/15
राहु	13/3/13	गुरु	10/10/13	शनि	30/10/14	बुध	2/5/15	केतु	15/11/15
गुरु	30/4/13	शनि	3/11/13	बुध	30/12/14	केतु	9/5/15	शुक्र	20/12/15
शनि	27/6/13	बुध	24/11/13	केतु	24/1/15	शुक्र	30/5/15	सूर्य	30/12/15

दशा भोग्य: VEN 5 Y 0 M 13 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

राहु — राहु 30/12/15 से 12/9/18		राहु — गुरु 12/9/18 से 6/2/21		राहु — शनि 6/2/21 से 12/12/23		राहु — बुध 12/12/23 से 30/6/26		राहु — केतु 30/6/26 से 18/7/27	
राहु	26/5/16	गुरु	7/1/19	शनि	18/7/21	बुध	22/4/24	केतु	22/7/26
गुरु	5/10/16	शनि	24/5/19	बुध	14/12/21	केतु	16/6/24	शुक्र	25/9/26
शनि	9/3/17	बुध	26/9/19	केतु	14/2/22	शुक्र	19/11/24	सूर्य	14/10/26
बुध	27/7/17	केतु	17/11/19	शुक्र	5/8/22	सूर्य	5/1/25	चंद्र	15/11/26
केतु	24/9/17	शुक्र	11/4/20	सूर्य	26/9/22	चंद्र	21/3/25	मंगल	8/12/26
शुक्र	6/3/18	सूर्य	24/5/20	चंद्र	21/12/22	मंगल	15/5/25	राहु	4/2/27
सूर्य	24/4/18	चंद्र	6/8/20	मंगल	21/2/23	राहु	2/10/25	गुरु	25/3/27
चंद्र	15/7/18	मंगल	26/9/20	राहु	25/7/23	गुरु	5/2/26	शनि	24/5/27
मंगल	12/9/18	राहु	6/2/21	गुरु	12/12/23	शनि	30/6/26	बुध	18/7/27

राहु — शुक्र 18/7/27 से 18/7/30		राहु — सूर्य 18/7/30 से 12/6/31		राहु — चंद्र 12/6/31 से 12/12/32		राहु — मंगल 12/12/32 से 30/12/33		गुरु — गुरु 30/12/33 से 18/2/36	
शुक्र	18/1/28	सूर्य	4/8/30	चंद्र	27/7/31	मंगल	4/1/33	गुरु	12/4/34
सूर्य	12/3/28	चंद्र	1/9/30	मंगल	29/8/31	राहु	1/3/33	शनि	14/8/34
चंद्र	12/6/28	मंगल	20/9/30	राहु	20/11/31	गुरु	21/4/33	बुध	3/12/34
मंगल	15/8/28	राहु	9/11/30	गुरु	2/2/32	शनि	21/6/33	केतु	18/1/35
राहु	27/1/29	गुरु	22/12/30	शनि	27/4/32	बुध	15/8/33	शुक्र	26/5/35
गुरु	21/6/29	शनि	13/2/31	बुध	14/7/32	केतु	7/9/33	सूर्य	4/7/35
शनि	12/12/29	बुध	29/3/31	केतु	15/8/32	शुक्र	10/11/33	चंद्र	8/9/35
बुध	15/5/30	केतु	18/4/31	शुक्र	15/11/32	सूर्य	29/11/33	मंगल	23/10/35
केतु	18/7/30	शुक्र	12/6/31	सूर्य	12/12/32	चंद्र	30/12/33	राहु	18/2/36

गुरु — शनि 18/2/36 से 30/8/38		गुरु — बुध 30/8/38 से 6/12/40		गुरु — केतु 6/12/40 से 12/11/41		गुरु — शुक्र 12/11/41 से 12/7/44		गुरु — सूर्य 12/7/44 से 30/4/45	
शनि	12/7/36	बुध	26/12/38	केतु	26/12/40	शुक्र	22/4/42	सूर्य	26/7/44
बुध	22/11/36	केतु	13/2/39	शुक्र	22/2/41	सूर्य	10/6/42	चंद्र	20/8/44
केतु	15/1/37	शुक्र	29/6/39	सूर्य	8/3/41	चंद्र	30/8/42	मंगल	7/9/44
शुक्र	17/6/37	सूर्य	10/8/39	चंद्र	6/4/41	मंगल	26/10/42	राहु	20/10/44
सूर्य	2/8/37	चंद्र	18/10/39	मंगल	26/4/41	राहु	20/3/43	गुरु	29/11/44
चंद्र	18/10/37	मंगल	6/12/39	राहु	16/6/41	गुरु	28/7/43	शनि	14/1/45
मंगल	12/12/37	राहु	8/4/40	गुरु	1/8/41	शनि	30/12/43	बुध	25/2/45
राहु	28/4/38	गुरु	27/7/40	शनि	24/9/41	बुध	16/5/44	केतु	12/3/45
गुरु	30/8/38	शनि	6/12/40	बुध	12/11/41	केतु	12/7/44	शुक्र	30/4/45

दशा भोग्य: VEN 5 Y 0 M 13 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: के.पी. नया

गुरु — चंद्र 30/ 4/45 से 30/ 8/46		गुरु — मंगल 30/ 8/46 से 6/ 8/47		गुरु — राहु 6/ 8/47 से 30/12/49		शनि — शनि 30/12/49 से 3/ 1/53		शनि — बुध 3/ 1/53 से 12/ 9/55	
चंद्र	10/ 6/45	मंगल	20/ 9/46	राहु	16/12/47	शनि	21/ 6/50	बुध	20/ 5/53
मंगल	8/ 7/45	राहु	10/11/46	गुरु	11/ 4/48	बुध	25/11/50	केतु	17/ 7/53
राहु	20/ 9/45	गुरु	25/12/46	शनि	28/ 8/48	केतु	28/ 1/51	शुक्र	28/12/53
गुरु	24/11/45	शनि	18/ 2/47	बुध	30/12/48	शुक्र	29/ 7/51	सूर्य	17/ 2/54
शनि	10/ 2/46	बुध	6/ 4/47	केतु	20/ 2/49	सूर्य	23/ 9/51	चंद्र	8/ 5/54
बुध	18/ 4/46	केतु	25/ 4/47	शुक्र	14/ 7/49	चंद्र	23/12/51	मंगल	4/ 7/54
केतु	16/ 5/46	शुक्र	21/ 6/47	सूर्य	28/ 8/49	मंगल	26/ 2/52	राहु	29/11/54
शुक्र	6/ 8/46	सूर्य	8/ 7/47	चंद्र	10/11/49	राहु	9/ 8/52	गुरु	9/ 4/55
सूर्य	30/ 8/46	चंद्र	6/ 8/47	मंगल	30/12/49	गुरु	3/ 1/53	शनि	12/ 9/55

शनि — केतु 12/ 9/55 से 21/10/56		शनि — शुक्र 21/10/56 से 21/12/59		शनि — सूर्य 21/12/59 से 3/12/60		शनि — चंद्र 3/12/60 से 3/ 7/62		शनि — मंगल 3/ 7/62 से 12/ 8/63	
केतु	5/10/55	शुक्र	1/ 5/57	सूर्य	8/ 1/60	चंद्र	21/ 1/61	मंगल	26/ 7/62
शुक्र	12/12/55	सूर्य	28/ 6/57	चंद्र	7/ 2/60	मंगल	24/ 2/61	राहु	26/ 9/62
सूर्य	2/ 1/56	चंद्र	3/10/57	मंगल	27/ 2/60	राहु	19/ 5/61	गुरु	19/11/62
चंद्र	5/ 2/56	मंगल	10/12/57	राहु	18/ 4/60	गुरु	5/ 8/61	शनि	23/ 1/63
मंगल	28/ 2/56	राहु	1/ 6/58	गुरु	3/ 6/60	शनि	6/11/61	बुध	19/ 3/63
राहु	28/ 4/56	गुरु	3/11/58	शनि	28/ 7/60	बुध	26/ 1/62	केतु	12/ 4/63
गुरु	21/ 6/56	शनि	3/ 5/59	बुध	16/ 9/60	केतु	2/ 3/62	शुक्र	19/ 6/63
शनि	24/ 8/56	बुध	15/10/59	केतु	6/10/60	शुक्र	5/ 6/62	सूर्य	9/ 7/63
बुध	21/10/56	केतु	21/12/59	शुक्र	3/12/60	सूर्य	3/ 7/62	चंद्र	12/ 8/63

शनि — राहु 12/ 8/63 से 18/ 6/66		शनि — गुरु 18/ 6/66 से 30/12/68	
राहु	16/ 1/64	गुरु	20/10/66
गुरु	3/ 6/64	शनि	14/ 3/67
शनि	15/11/64	बुध	23/ 7/67
बुध	11/ 4/65	केतु	16/ 9/67
केतु	10/ 6/65	शुक्र	18/ 2/68
शुक्र	1/12/65	सूर्य	4/ 4/68
सूर्य	23/ 1/66	चंद्र	20/ 6/68
चंद्र	18/ 4/66	मंगल	13/ 8/68
मंगल	18/ 6/66	राहु	30/12/68

॥ मैत्री चक्र ॥

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चंद्र	शत्रु	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	...	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	...	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	...

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	सम
चंद्र	सम	...	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	...	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	अतिमित्र	अतिशत्रु	मित्र	...	मित्र	अतिमित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	...	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	...	अतिमित्र
शनि	सम	अतिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	...

॥ षड्बल एवं भावबल तालिका ॥

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते हैं तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	34.15	23.23	39.03	13.91	28.48	51.59	44.8
सप्तवर्गज बल	105	71.25	146.25	120	67.5	101.25	127.5
ओजयुग्मरस्यांश बल	0	0	15	30	30	30	15
केन्द्र बल	60	30	30	30	60	15	15
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	199.15	139.48	230.28	193.91	200.98	197.84	202.3
कुल दिग्बल	5.33	15.62	13.78	20.55	1.49	41.56	20.22
नतोन्त बल	5.42	54.58	54.58	60	5.42	5.42	54.58
पक्ष बल	10.29	10.29	10.29	49.71	49.71	49.71	10.29
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	19.2	23.46	0.81	45.9	41.87	27.72	59.95
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	34.9	88.33	80.68	155.62	187	187.85	184.82
कुल चेष्टा बल	15.38	49.71	22.58	50.34	24.73	28.87	16.45
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	-4.31	12.15	24.8	-4.27	-6.3	-22.94	27.35
कुल षड्बल	310.45	356.72	389.29	441.88	442.16	476.02	459.72
षड्बल (रूपस)	5.17	5.95	6.49	7.36	7.37	7.93	7.66
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	1.03	0.99	1.3	1.05	1.13	1.44	1.53
सापेक्षिक क्रम	6	7	3	5	4	2	1

भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	476.02	389.29	442.16	459.72	459.72	442.16	389.29	476.02	441.88	356.72	310.45	441.88
भाव दिग्बल	60	10	40	0	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	81.97	68.13	70.15	14.69	-15.23	-23.23	7.34	42.23	28.01	22.94	88.34	52.59
कुल भाव बल	617.99	467.42	552.32	474.41	464.48	458.93	426.63	558.25	489.89	379.66	448.79	544.47
कुल भाव बल (रूपस में)	10.3	7.79	9.21	7.91	7.74	7.65	7.11	9.3	8.16	6.33	7.48	9.07
सापेक्षिक क्रम	1	7	3	6	8	9	11	2	5	12	10	4

॥ ग्रह दृष्टि (पाश्चात्य) ॥

	सूर्य 292 32	चंद्र 143 23	मंगल 235 11	बुध 303 22	गुरु 0 31	शुक्र 331 51	शनि 245 40	राहु 331 40	केतु 151 40	अरुण 246 2	वरुण 255 24	यम 198 55
सूर्य 292. 32	युति 2.78	..	नवां 0.32	..	नवां 0.13
चंद्र 143. 23	पष्ठ 0.14	..	चतुर्थ 2.11	सप्त 4.36	..	सप्त 4.49	युति 4.49	तृती 0.77
मंगल 235. 11	तृती 1.68	युति 3.01	युति 2.76
बुध 303. 22
गुरु 0. 31
शुक्र 331. 51
शनि 245. 40	तृती 1.85	..	चतुर्थ 1.09	..	चतुर्थ 1.0	..	युति 9.75	युति 3.51	..
राहु 331. 40	युति 9.87
केतु 151. 40	सप्त 9.87	चतुर्थ 1.0	सप्त 10.0	..	चतुर्थ 0.81
अरुण 246. 2	तृती 1.66	..	चतुर्थ 0.91	..	चतुर्थ 0.81	युति 3.76	..
वरुण 255. 24
यम 198. 55	चतुर्थ 1.2	तृती 1.24	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	पष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. ग्रहों के नाम के नीचे ग्रहों के अंश व कला दिए गए हैं।

4. एप्पलाइंग दृष्टि के लिए बाएं से ऊपर देखें और सेपरेटिंग दृष्टि के लिए ऊपर से बाएं देखें।

॥ भावमध्य पर दृष्टि ॥

	1 185 0	2 215 31	3 246 1	4 276 32	5 306 1	6 335 31	7 5 0	8 35 31	9 66 1	10 96 32	11 126 1	12 155 31
सूर्य 292. 32	युति 1.01
चंद्र 143. 23	..	पंचा 0.88	सप्त 1.92	युति 1.92
मंगल 235. 11	युति 2.77
बुध 303. 22	युति 8.23
गुरु 0. 31	सप्त 7.01	युति 7.01	..	तृती 0.25	..	पंच 0.25	..
शुक्र 331. 51	युति 7.56
शनि 245. 40	युति 9.77	..	तृती 2.82	चतुर्थ 2.92
राहु 331. 40	युति 7.43
केतु 151. 40	..	तृती 1.08	चतुर्थ 0.82	पंच 0.57	..	सप्त 7.43	युति 7.43
अरुण 246. 2	तृती 2.99	चतुर्थ 2.74
वरुण 255. 24
यम 198. 55

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. चलित चक्र की भावमध्य अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की भाव मध्य पर एप्पलाइड दिखाई गई है।

॥ केपी संधि पर दृष्टि ॥

	1 185 0	2 213 56	3 244 35	4 276 32	5 308 36	6 338 36	7 5 0	8 33 56	9 64 35	10 96 32	11 128 36	12 158 36
सूर्य 292. 32
चंद्र 143. 23	सप्त 0.14
मंगल 235. 11	युति 3.73
बुध 303. 22	युति 6.51
गुरु 0. 31	सप्त 7.01	युति 7.01	..	तृती 0.97
शुक्र 331. 51	युति 5.51
शनि 245. 40	तृती 1.53	चतुर्थ 1.54
राहु 331. 40	युति 5.38
केतु 151. 40	..	तृती 1.87	चतुर्थ 1.54	पंच 0.57	..	सप्त 5.38	युति 5.38
अरुण 246. 2	तृती 1.72	चतुर्थ 1.72
वरुण 255. 24
यम 198. 55	अर्धद्वितीय 0.34

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

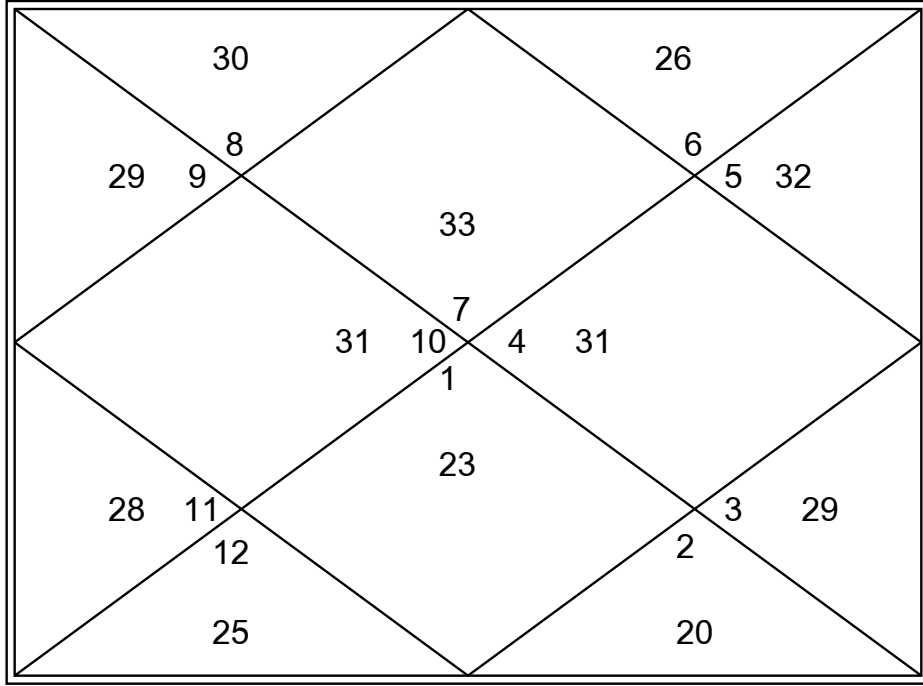
3. निरयन भाव चलित (केपी चक्र) के भाव प्रारम्भ अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की केपी भाव प्रारम्भ पर एप्पलाइड दृष्टि दिखाई गई है।

॥ अष्टकवर्ग तालिका ॥

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	2	2	4	5	6	6	4	3	5	5	4	2
चन्द्र	4	4	4	5	5	3	4	4	4	4	4	4
मंगल	1	2	5	3	4	3	5	2	4	3	3	4
बुध	2	5	6	5	3	5	4	7	4	5	3	5
गुरु	6	4	5	5	4	3	4	7	4	4	7	3
शुक्र	5	2	4	5	5	3	6	5	6	4	3	4
शनि	3	1	1	3	5	3	6	2	2	6	4	3
योग	23	20	29	31	32	26	33	30	29	31	28	25

अष्टकवर्ग चार्ट:



॥ प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ॥

सूर्य

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
चन्द्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
राहू	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
योग	2	2	4	5	6	6	4	3	5	5	4	2	

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
चन्द्र	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	0	6
मंगल	1	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
राहू	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
योग	4	4	4	5	5	3	4	4	4	4	4	4	

मंगल

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
चन्द्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
राहू	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
योग	1	2	5	3	4	3	5	2	4	3	3	4	

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
चन्द्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	6
मंगल	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
राहू	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
योग	2	5	6	5	3	5	4	7	4	5	3	5	

गुरु

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
चन्द्र	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	5
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
राहू	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
योग	6	4	5	5	4	3	4	7	4	4	7	3	

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	3
चन्द्र	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	9
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
राहू	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
योग	5	2	4	5	5	3	6	5	6	4	3	4	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7
चन्द्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3
मंगल	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	6
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
राहू	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
योग	3	1	1	3	5	3	6	2	2	6	4	3	

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report are provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).